अक्तूबर (द्वितीय) 2021 | ₹35.00

चंपक

J

VISIT…

चंपक

अक्तूबर (द्वितीय) 2021 अंक : 1223

संस्थापक
विश्वनाथ
1917–2002

सुनो कहानी

बच्चों का दशहरा 4
लौकी और उस के प्रकार 13
औनलाइन दशहरा 18
फन्नी सुधर गया 22
बुराई पर विजय 30
मोंटी का रोबोट 35
रोमांचक शाम 40
पिंजरे से आजादी 48

मुखपृष्ठ

त्योहारों के इस मौसम में बहुत ही मजे, मस्तीभरी दावतें और बहुत सी बातें हमें एकसाथ ऐंजौय करने को मिलती हैं. दशहरा और हैलोवीन जैसे त्योहारों को मनाने के लिए इस अंक को पढ़ें और मजेदार गेंद से लुत्फ उठाइए.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो 8
रास्ता बताओ 9
देखो हंस न देना 10
सही बौल को चुनें 12
बताओ तो जानें 16
मोमो चूहे की मदद करें 21
मधुमक्खियों के घर खोजो 25
बिंदु मिलाओ 28
छिपे चित्र ढूंढ़ें 29
चित्र पूरा करें 34
स्मार्ट 39
अंतर बताओ 46
गलत को बताएं 47

चित्र कथाएं

डमरू और पेंटिंग 11
चीकू 26
दादाजी और दशहरा 44

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान 17

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.

Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नेगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

बच्चों का दशहरा

कहानी • कुमुद कुमार

मीकू खरगोश और उस का दोस्त इस बात से बड़े दुखी थे कि इस बार दशहरे के मेले का आयोजन नहीं हो रहा था. उन के मम्मीपापा ने उन्हें रामलीला मैदान भेजने से साफ मना कर दिया था.

मीकू अपने दोस्तों ब्लैकी भालू, गिगी जिराफ और जंपी बंदर के साथ महल्ले के पार्क में बैठा था. दशहरे का मेला न लगने के कारण सब के चेहरे लटके हुए थे. इस कारण किसी का मन खेलने में भी नहीं लग रहा था.

तभी जंपी ने उछलते हुए कहा, ‘‘आइडिया.’’

जंपी को ऐसे चहकते देख, मीकू ने पूछा, ‘‘अरे जंपी, तुम्हें ऐसा कौन सा आइडिया सूझ गया जो हनुमान की तरह पूंछ उठा कर उछल रहे हो?’’

अपनी उंगलियों से विजय का चिन्ह बनाते हुए जंपी ने कहा, ‘‘मीकू, आइडिया ही इतना जोरदार है. क्यों न हम अपना दशहरा मनाएं?’’

उस की बात सुन कर सब उस की तरफ देखने लगे. मानो जंपी के मन में कुछ चल रहा हो और वे सब उस के मन की बात जानना चाहते हों. गिगी ने अपनी गरदन उचकाते हुए कहा, ‘‘जंपी, पहेलियां मत बुझाओ. सीधेसीधे बताओ कि हम बच्चे दशहरा कैसे मना सकते हैं?’’

फिर जंपी ने सब को अपना विचार बताया. उस का

आइडिया सुन कर सब खुशी से उछल पड़े. जंपी का आइडिया ही इतना जोरदार था.

बिना देर किए मीकू और उस के दोस्तों ने पार्क में बैठेबैठे ही दशहरा मनाने की पूरी योजना बना डाली.

मीकू और उस के दोस्तों ने अपने मम्मीपापा को मना कर दशहरा मेला घूमने के अपने जेबखर्च के 100 रुपए ले लिए. कुछ पैसे उन्होंने अपने कुछ और दोस्तों को अपनी योजना में शामिल कर के जुटा लिए.

इसलिए इन रुपयों से उन्होंने धनुषबाण, नकली तलवार, गदा, पुतले बनाने का सामान, पटाखे और कुछ अन्य सामान खरीदा.

उन के लिए सब से मुश्किल काम था, रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतले बनाने का.

ब्लैकी के चाचा पुतले बनाने में माहिर थे. ब्लैकी ने यह कला उन से ही सीखी थी.

''दोस्तो, पुतला बनाना तो एकदम आसान है.''

''वह कैसे ब्लैकी?'' जंपी ने पूछा.

''अरे बस, एक औसत लंबाई का बांस लो. उस के ऊपर का कुछ हिस्सा छोड़ कर क्रौस बनाते हुए उस में बांस की एक खपच्ची बांध दो. फिर उस बांस और खपच्ची में पुआल या घासफूस बांध दो.''

''फिर क्या करना है, ब्लैकी?'' जंबो हाथी ने सूंड़ उठा कर पूछा.

''फिर उस पुआल के ऊपर मनचाहा कपड़ा लपेट दो, जिस का पुतला बनाना है, ऊपर की तरफ उस का मुखौटा बना दो या लगा दो. बस, पुतला तैयार है.''

''अरे वाह, यह तो एकदम आसान है. हम उन पुतलों को रावण, कुंभकरण और मेघनाद की पोशाक पहना देंगे,'' मीकू ने कहा.

इस काम के लिए मीकू और उस के दोस्त जंबो हाथी के बगीचे में खाली पड़ा एक कमरा इस्तेमाल कर रहे थे. सारे दोस्तों ने दशहरे से पहले पुतले आदि बनाने की सारी तैयारियां पूरी कर लीं.

पार्क में उन्होंने सामाजिक दूरी बना कर दशहरा मनाने की अनुमति सोसायटी के सचिव शेरू चाचा से पहले ही ले ली थी.

दशहरे वाले दिन शाम के समय पार्क में बच्चों की हलचल काफी बढ़ गई.

पहले बच्चों ने पार्क में रस्सी और तार की सहायता से रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतले लगाए. रावण का पुतला 7 फीट और कुंभकरण तथा मेघनाद के पुतले 5-5 फीट के थे.

पुतले लगते ही हाउसिंग सोसायटी के निवासी अपनी

बालकनी और खिड़कियों से कौतुहलवश उन पुतलों को देखने लगे. कुछ ने उस पार्क में आने की भी कोशिश की, लेकिन मीकू और उस के दोस्तों ने बच्चों के सिवा किसी को भी उस समय पार्क में भीड़ बढ़ाने की अनुमति नहीं दी.

सब यही सोच रहे थे कि आखिर ये बच्चे कर क्या रहे हैं? कोई कुछ सोचता था, कोई कुछ.

शाम ढलने तक बच्चों ने सारी तैयारियां पूरी कर लीं. तब लंबू जिराफ ने माइक से घोषणा की, ‘‘प्यारे सोसायटी के निवासियो, इस बार रामलीला मैदान में दशहरा मेला न लगने के कारण हम बच्चों ने अपने ढंग से दशहरा मनाने का निर्णय किया है. आप अगर बच्चों के इस दशहरे का आनंद निकट से लेना चाहते हैं तो मास्क लगा कर पार्क में आएं. पार्क में गोलाई में सामाजिक दूरी के हिसाब से कुर्सियां रखी हैं. कुर्सी पर बैठने का कूपन 20 रुपए का है.’’

यह घोषणा सुनते ही सोसायटी के लोग कूपन लेने के लिए दौड़ पड़े. कुछ ही देर में सारे कूपन बिक गए.

जैसे ही शाम का हलका सा अंधेरा हुआ, पार्क में बना मंच लाइट्स से जगमगा उठा. वहां बैठे लोगों ने देखा कि मंच पर जोरदार रामरावण युद्ध चल रहा है. रावण पैंतरे बदलबदल कर राम पर तलवार से हमला करने की फिराक में है. वहीं राम धनुषबाण से रावण पर निशाना साध रहे हैं, लेकिन कई बाण लगने के बाद भी रावण पर कोई असर नहीं हो रहा है.

राम ने विभीषण का इशारा पा कर रावण की नाभि में तीर मारा. नाभि में तीर लगते ही रावण धराशायी हो गया. मंच पर रावण के धराशायी होते ही ब्लैकी ने पुतलों के पटाखों में आग लगा दी. पटाखों में आग लगते ही रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतले धूंधूं कर जल उठे. पटाखों की आवाज सारी सोसायटी में गूंज उठी.

अरे रे रे रे... ये क्या हुआ? अचानक कुंभकरण का पुतला आसमान की ओर उड़ने लगा. यह देख कर सब घबरा गए. दर्शक अपनी कुर्सियां छोड़ कर खड़े हो गए.

गिगी जिराफ ने माइक से घोषणा की, ‘‘भाइयो और बहनो, किसी को घबराने की जरूरत नहीं है. यह सब आप के मनोरंजन का हिस्सा है. कुंभकरण के पुतले में कई रौकेट बांधे गए थे, जिस कारण वह ऊपर की ओर उड़ गया. किसी को डरने की जरूरत नहीं है.’’

उस के बाद ही वह पुतला जल कर एक कोने में जा गिरा. तब जा कर दर्शकों की सांस में सांस आई. बच्चों के लिए यह दृश्य बड़ा ही मनोरंजक था. उन्होंने खूब तालियां बजाईं

तभी माइक से एक बार फिर आवाज आई, लेकिन यह आवाज शेरू चाचा की थी. वे कह रहे थे, ‘‘प्रिय निवासियो, बच्चों ने अपने हुनर का जो कमाल

दिखाया है, वह तारीफ के काबिल है. उन्होंने पूरा दशहरा यहीं दिखा दिया. हमारी कमेटी बच्चों के इस प्रदर्शन से बहुत खुश है. हमारे अध्यक्ष जीतू चीते ने बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए 2 हजार रूपए का इनाम देने की घोषणा की है.''

यह सुनते ही बच्चे खुशी से उछल पड़े. इस के बाद कुछ और दर्शकों ने भी उन्हें इनाम देने की घोषणा की. इस से बच्चों का जेबखर्च तो वापस आ ही गया उन की कुछ बचत भी हो गई. उन की मेहनत के लिए जो शाबाशी और तालियां मिलीं वह अलग थीं.

शेरू चाचा ने फिर घोषणा की, ''सोसायटीवासियो, कमेटी की ओर से सभी के लिए 'सामुदायिक केंद्र' में बढ़िया चायपानी का बंदोबस्त है. आप सभी सामाजिक दूरी का ध्यान रखते हुए चायपानी के साथसाथ चाटपकौड़ी, गरमागरम देसी घी में बनी जलेबी और अन्य व्यंजनों का भी लुत्फ़ उठा सकते हैं.''

यह सुनते ही सब के मुंह में पानी आ गया. सब के सब सामुदायिक केंद्र की ओर चल पड़े. मीकू और उस के दोस्तों के बीच कमेटी वालों ने इनाम की धनराशि बांट दी. इस तरह बच्चों को कमेटी वालों ने अच्छे कार्यक्रम के लिए खूब शाबाशी और शुभकामनाएं भी दीं.

इस प्रकार बच्चों ने खुद दशहरे का कार्यक्रम आयोजित कर सोसायटीवासियों का मनोरंजन तो किया ही साथ ही अपने खुद के दशहरा उत्सव की मेजबानी कर एक नई पहल भी की. ●

सुंदर रंग भरो

रास्ता बताओ

31 अक्तूबर को विश्व महानगर दिवस है. मीरा की मदद नगरों से हो कर अपने रास्ते को ढूंढ़ने में करें.

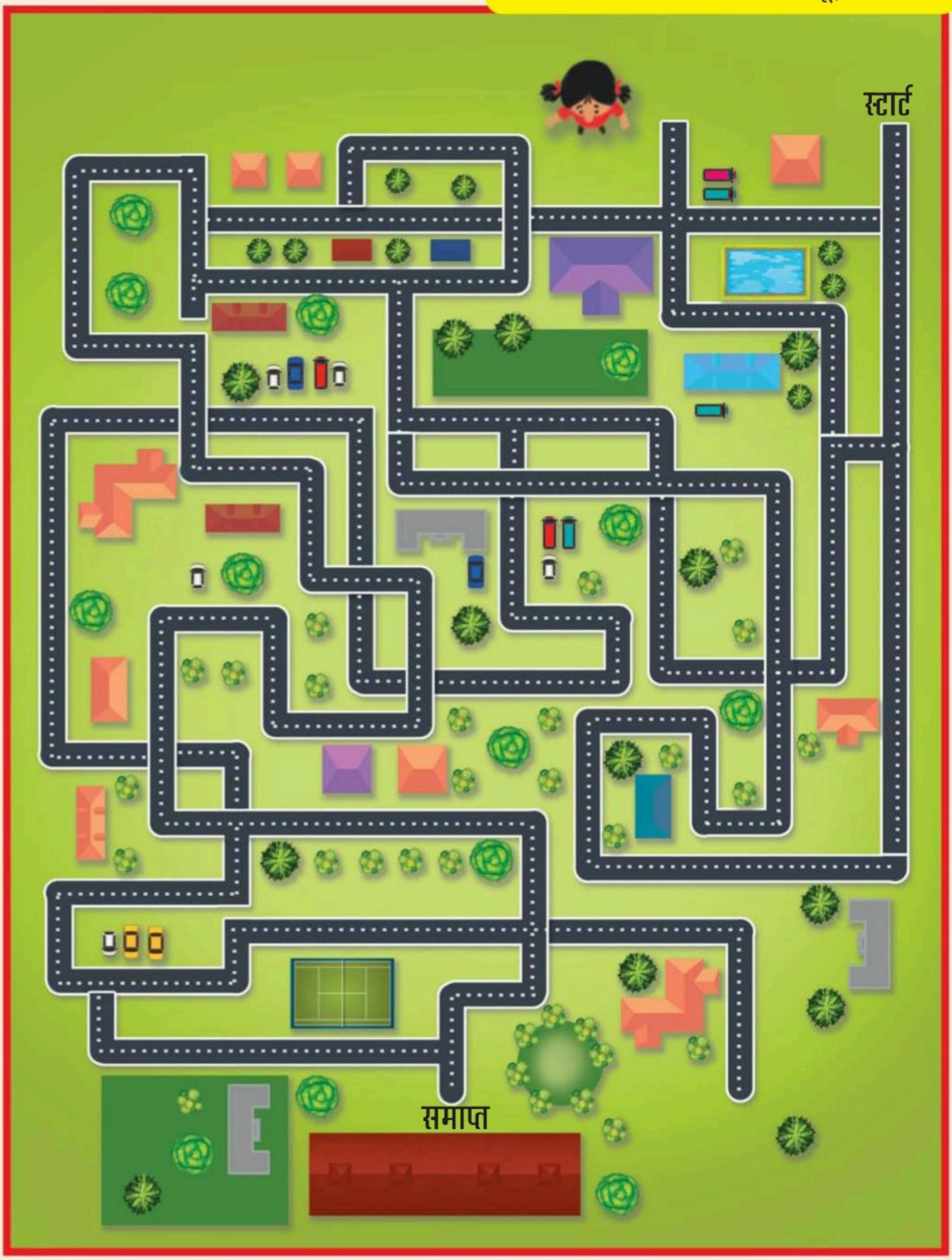

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

देखो हंस न देना

जौन (मैक्स से) : तुम्हारा फेवेरिट यानी पसंदीदा कलर क्या है?
मैक्स : बच्चे की तरह बेवकूफी वाला प्रश्न पूछना बंद करो.
जौन : ओके, लैब में फौर्मिक एसिड कैसे बनाया जाता है? इस का कैमिकल इक्वेशन क्या है?
मैक्स : मेरा फेवरिट कलर पिंक है.

शौर्यमान पांडे, 14 वर्ष,
उत्तर प्रदेश

चिंटू (पिंटू से) : एक ट्रक गांव की ओर गया, उस ने रास्ते में 4 कारें देखीं. कितनी गाड़ियां गांव की ओर जा रही हैं?
पिंटू : एक ट्रक क्योंकि ट्रक ड्राइवर ने 4 कारों को रोड के विपरीत दिशा में आते देखा. इसलिए सिर्फ ट्रक ही गांव में गया.

शिप्राव शिवकुमार, 12 वर्ष,
मैसूरू

टीचर (छात्र से) : मैं ने तुम से एक बैक्टिरिया का चित्र बनाने को कहा था. तुम मुझे ब्लैंकशीट क्यों दे रहे हो?
छात्र : मैं ने इसे बनाया है, लेकिन आप इन नंगी आंखों से उसे नहीं देख सकते हैं, क्योंकि वह बैक्टिरिया है.

धैर्य महेंदीरता, 8 वर्ष,
गुरुग्राम

चीकू (मीशू से) : कौन सा टीवी शो अर्ली ह्यूमन यानी प्राचीन काल के मनुष्यों के बारे में बताता है?
मीश : गेम औफ स्टोन्स.

जारा अहमद, 10 वर्ष
भठिंडा

कोमल (विमल से) : बेबी कौर्न ने मम्मी कौर्न से क्या पूछा?
विमल : पौपकौर्न कहां हैं?

वरद निपासे, 8 वर्ष

बेटा (पापा से) : पापा, स्कूल में एक छोटी सी सभा होने वाली है. आप को मेरे साथ चलना है.
पापा : सभा? उस में कौनकौन होंगे?
बेटा : ज्यादा लोग नहीं होंगे. कोरोना वायरस महामारी की वजह से सिर्फ मैं, आप और प्रिंसिपल सर होंगे.

अरिजीत मजूमदार, 12 वर्ष
वडोडरा

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

अंशु (किट्टू से) : उन्होंने गायों को घंटियां क्यों बांधी हैं?
किट्टू : क्योंकि गायों के सींग काम नहीं करते हैं.

श्रेया धर्माधिकारी, 6 वर्ष, ठाणे

राम (श्याम से) : मैं कुछ ऐसा कर सकता हूं. जिसे कोई नहीं कर सकता है.
श्याम : सच में. वह क्या है?
राम : मैं अपनी हैंडराइटिंग समझ सकता हूं.

ऐंजेल निस्सी, 13 वर्ष
विजयवाड़ा

टीचर (छात्र से) : अगर तुम्हें 13 सेब, 12 अंगूर, 3 अनन्नास और 3 स्ट्रौबेरीज दी गई हों, तो तुम्हारे पास क्या है?
छात्र : फलों का सलाद.

कैलेब मैसी, 14 वर्ष
अंबाला

आशु (हर्ष से) : आसमान में क्या डगमगाता है?
हर्ष : एक जैली कौप्टर.

सान्वि वी, 9 वर्ष
महाराष्ट्र

इंटरव्यू लेने वाला (कैंडिडेट से) : कल्पना करो कि तुम तीसरी मंजिल पर हो जिस ने अभीअभी आग पकड़ ली है. तुम कैसे भागोगे?
कैंडिडेट : बहुत आसान है, मैं तुरंत कल्पना करना बंद कर दूंगा.

रिषभ शाहा, 9 वर्ष, कोलकाता

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 8657402248**
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू और पेंटिंग

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

डमरू को जैक्शन बंदर के यहां काम मिला.

डमरू, वहां अंदर पेंट के डब्बे हैं. कल दीवारों को पेंट किया जाएगा.

यह पेंट क्या है?

यह दीवारों को रंगने और खूबसूरत बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है.

अच्छा, यह बात है, मैं समझ गया.

अगले दिन

घर में पेंटिंग के कार्य की वजह से मेरी चीजें इधरउधर बिखर जाएंगी. मेरी यह पैनड्राइव मेरी पैंट की जेब में रख दो.

जरूर मालिक.

सावधानी से रखना. इस के अंदर मेरी महत्त्वपूर्ण फाइलें हैं.

आप चिंता न करें, मालिक.

कुछ देर बाद

डमरू, मेरी पैनड्राइव ले आओ.

अभी लाया, मालिक.

यह क्या है?

मालिक, आप की पैनड्राइव इस के अंदर है. मैं आप की जेब नहीं ढूंढ़ सका था, इसलिए मैं ने पैनड्राइव सीधे इस में डाल दी.

तुम ने इसे पेंट के डब्बे में क्यों डाल दिया?

क्या? मेरा मतलब पैंट से था जिसे हम पहनते हैं, पेंट के डब्बे में नहीं डालनी थी, बेवकूफ.

आप ने ही तो कहा था कि इसे आप के 'पेंट' पौकेट यानी जेब में डाल देना.

SONAL

आप को यह बात साफसाफ बतानी चाहिए थी.

कम से कम मैं इतना तो जान गया कि दो तरह के पेंट होते हैं.

इस से पहले कि सारा पेंट मैं तुम्हारे ऊपर डाल दूं, भाग जाओ यहां से.

मेरी सारी फाइलें बरबाद हो गईं.

गुड लक, मालिक.

सही बौल को चुनें

बाहर से दो बौलों को चुनें और वर्ग के अंदर रखें. बौल का चुनाव इस तरह से होना चाहिए कि उन के जोड़ वर्ग के अंदर दिए गए बौल के अंक के समान हो जाएं.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

लौकी और उस के प्रकार

कहानी ● ऐलिजाबेथ फिलीप

''रीना, आलोक,'' दादीमां किचन से उन्हें आवाज लगाते हुए बोलीं, ''मैं सब्जियां खरीदने जा रही हूं, क्या तुम दोनों मेरे साथ आ रहे हो?''

''जरूर दादीमां,'' आलोक लीविंग रूम के सोफे से कूद पड़ा. वहां वह एक पत्रिका के पृष्ठ पलट रहा था.

रीना सीढ़ियों से उतर कर नीचे आई, ''मैं भी आ रही हूं. क्या हम कपड़े का कोई थैला नहीं लेंगे?''

''जरूर लेंगे,'' दादीमां ने कहा, ''मैं प्लास्टिक का बैग घर नहीं लाती हूं,'' बाजार तक पैदल जाने में उन्हें बस कुछ ही मिनट लगे.

सब्जी विक्रेता रामप्रकाश पर दादीमां मुसकराईं, जिस ने उन का हाथ जोड़ कर नमस्ते करते हुए स्वागत किया. उस ने कहा, ''नमस्ते माताजी, तो आज आप बच्चों को भी साथ लाई हैं.''

''आज तुम्हें लंच में क्या चाहिए?'' जब आलोक और रीना ने अपने चारों ओर साफसुथरे तरीके से सजा कर रखी ताजी सब्जियों को देख रहे थे तो दादीमां ने उन से पूछा.

आलोक ने नाक सिकोड़ी और कहा, ''हमें सब्जियां क्यों खानी पड़ती हैं? हम बढ़िया चीजें क्यों नहीं खा सकते? मुझे वो खीर पसंद है जो आप ने पिछले सप्ताह बनाई थी. वह बहुत ही स्वादिष्ठ थी,'' उस ने कहा.

दादीमां हंस पड़ीं. बोलीं, ''क्या तुम्हें पता है कि वह खीर लौकी के साथ बनी थी?''

''लौकी?'' आलोक मुसकराया. ''आप का मतलब इस से है,'' उस ने लौकी के एक देर की ओर इशारा करते हुए कहा.

दादीमां उस से सहमत हो कर हंस पड़ीं.

''लेकिन खीर तो बहुत ज्यादा स्वादिष्ठ थी,'' आलोक ने अचरज में फैली बड़ी आंखों के साथ टिप्पणी की.

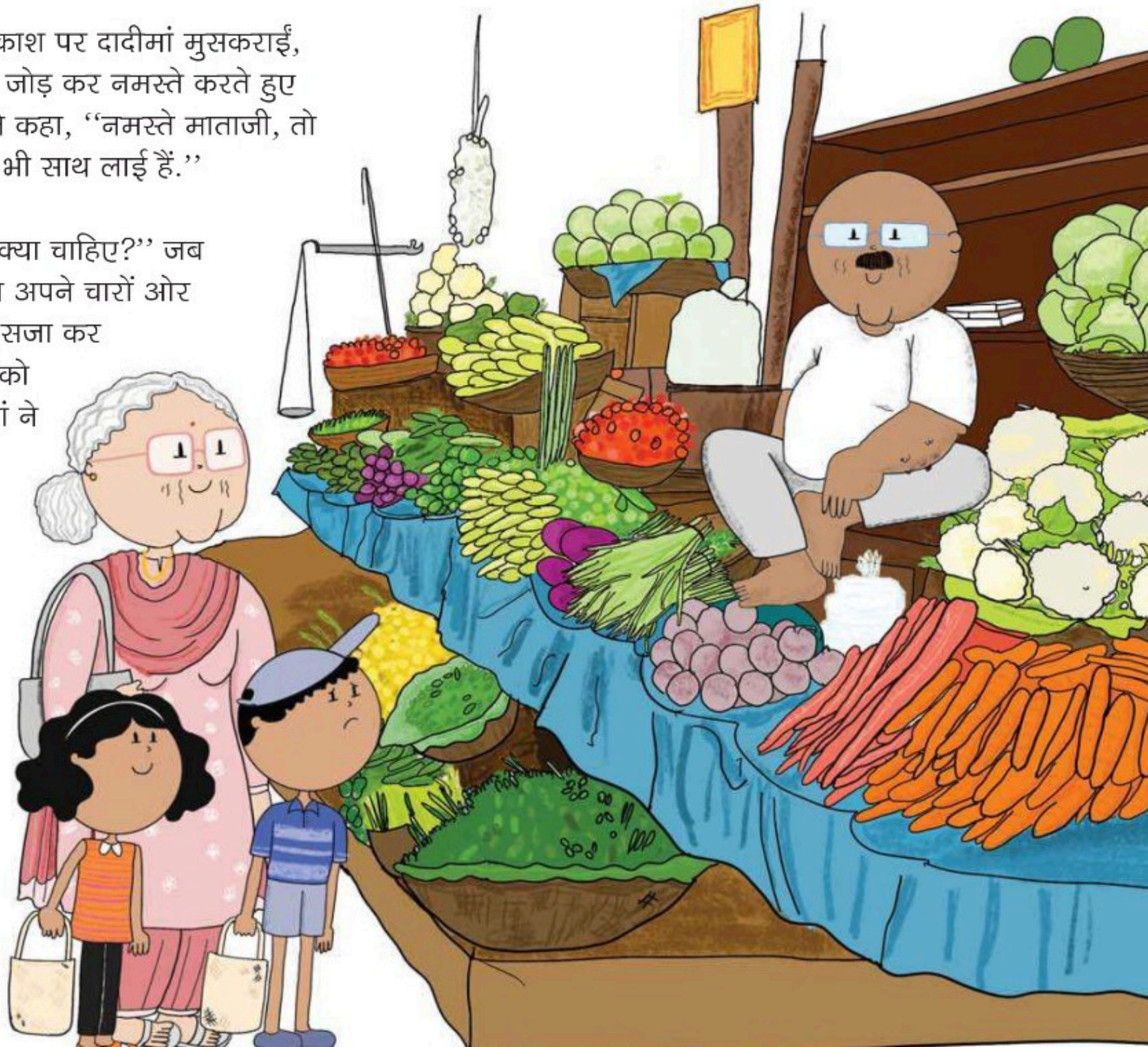

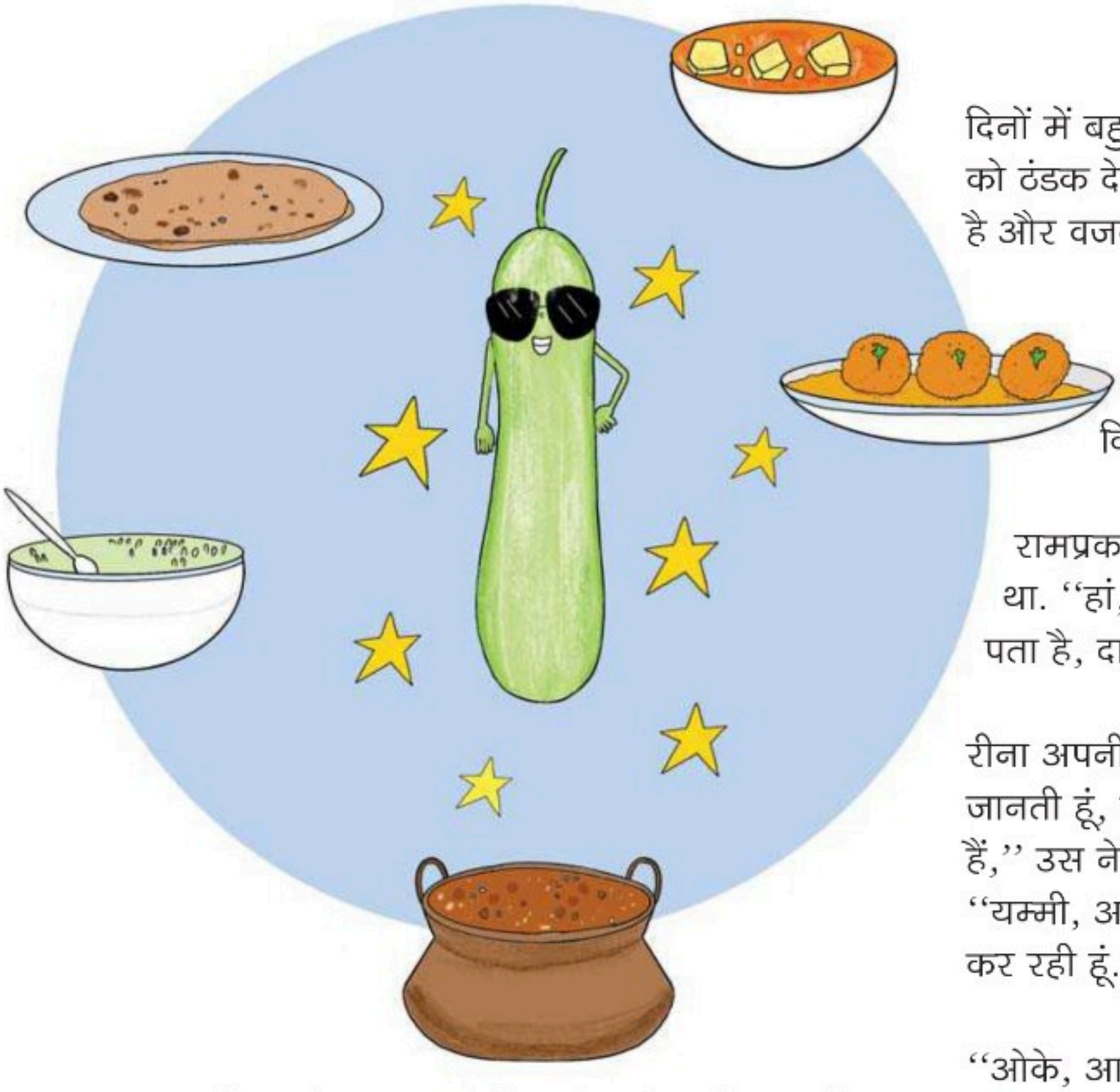

''इसलिए कौन कहता है कि सब्जियां स्वादिष्ठ नहीं हो सकतीं?'' दादीमां का जवाब था.

रामप्रकाश ने खींसें निपोरते हुए कहा, ''आप को कितनी लौकी चाहिए?''

''क्या मैं एक ले सकता हूं?'' आलोक ने पूछा.

''ठीक है, आगे बढ़ो,'' दादीमां लाल पके कुछ टमाटरों को उठाते हुए बोलीं.

''हम लौकी का इस्तेमाल कोफ्ता बनाने के लिए भी करते हैं, है न दादी मां?'' रीना ने पूछा.

''हां, क्या तुम्हें कोफ्ता पसंद हैं? मैं कल कोफ्ता करी बनाऊंगी.''

''यम्मीयम्मी...'' रीना ने तारीफ करते हुए कहा.

''क्या तुम जानती हो कि बहुत से लोग लौकी का जूस पीते हैं?'' दादीमां ने कहा, ''यह गरमियों के दिनों में बहुत ही अच्छा होता है, क्योंकि यह शरीर को ठंडक देता है. यह पाचन के लिए भी अच्छा होता है और वजन भी कम करता है.''

लौकी या कद्दू के बहुत से रिश्तेदार हैं. क्या तुम आसपास लौकी के परिवार के किसी सदस्य को देख सकते हो?''

रामप्रकाश भी उन की बातचीत का आनंद ले रहा था. ''हां, एक है, जो बहुत कड़वा है और मुझे पता है, दादाजी इसे बहुत पसंद करते हैं.''

रीना अपनी उंगली दांतों से काटते हुए बोली, ''मैं जानती हूं, करेला. इसे बिटरगौर्ड यानी करेला कहते हैं,'' उस ने अपने होंठों को सहलाया और कहा, ''यम्मी, अभीअभी करेला खाया है, मैं ऐसा महसूस कर रही हूं.''

''ओके, आधा किलो करेला भी दे दो,'' दादीमां ने रामप्रकाश से कहा.

''खीरे के बारे में आप का क्या विचार है?'' उस ने कहा.

''जरूर, हमें खीरा भी चाहिए,'' आलोक ने कहा.

''मुझे खीरे का सलाद पसंद है. रीना इस शाम हमें खीरे का सैंडविच बनाना चाहिए.''

''जरूर,'' रीना उस से सहमत थी. ''मैं तुम्हारी मदद करूंगी, रसोइए आलोक.''

निश्चित तौर पर दादीमां के पास उन के लिए और भी महत्त्वपूर्ण और मजेदार जानकारी थी. ''खीरे ताजे होते हैं, उन्हें बिना छिले खाना अच्छा होता है ताकि इस के फाइबर, विटामिंस और खनिज लवणों को नुकसान न हो जाए.''

''हां, मां ने भी हमें ये बात बताई है,'' आलोक ने सिर हिलाते हुए कहा.

''चलो, अब एक और सदस्य, पेठा से मिलते हैं,'' दादीमां ने एक बड़ा, सफेद और अजीब सी दिखने वाली सब्जी की तरफ इशारा करते हुए कहा.

''लेकिन पेठा क्या मिठाई नहीं है?'' रीना ने आश्चर्य से पूछा.

''हां,'' दादीमां हसीं. और बोलीं, ''पेठा इसी से बनाया जाता है.''

''क्या, सच में?'' आलोक चीख पड़ा.

''रूही आंटी तो हमेशा आगरा से पेठा ले कर आती हैं.''

''सिर्फ ताजमहल ही एक कारण नहीं है जिस के लिए आगरा प्रसिद्ध है. आगरा का पेठा पूरे विश्व में लोकप्रिय हो चुका है,'' दादीमां ने अपनी आंखों में एक चमक लाते हुए कहा.

''अभी कुछ दिन पहले की बात है, मैं ने एक पत्रिका में पढ़ा कि इस व्यंजन को सब से पहले शाहजहां की रसोई में पकाया गया था, ऐसा माना जाता है.'' दादीमां ने उन्हें जानकारी दी.

''इसे बहुत ही शुद्ध मिठाई का पकवान माना जाता है क्यों चीनी और पानी ही ऐसी दो सामग्री हैं जिन्हें इस में मिलाया जाता है.''

''लेकिन हम पेठा को अंगरेजी में क्या कहते हैं?'' रीना का यह अगला सवाल था.

''मुझे देखने दो,'' दादीमां गंभीर हो कर सोचने लगीं. ''मुझे याद आया, कम से कम तीन नाम हैं, वैक्सगौर्ड, ऐशगौर्ड और सफेद कोहड़ा यानी कद्दू.''

''वाउ, दादीमां, आप की याददाश्त तो तारीफेकाबिल है,'' आलोक ने आश्चर्य जताते हुए कहा.

''और आप की शब्दावली भी एक जवान आदमी की तरह उल्लेखनीय है,'' आलोक की पीठ को थपथपाते हुए दादीमां ने कहा.

''क्या आधा किलो पेठा भी दे दूं, माताजी?'' रामप्रकाश ने पूछा, ''बहुत ताजा है, आज ही सुबह आया है.''

दादीमां मुसकराईं और उन्होंने सिर हिला दिया. ''कृपया एक किलो आलू और एक किलो प्याज भी तौल देना, रामप्रकाश. हम दो दिन बाद फिर आएंगे.''

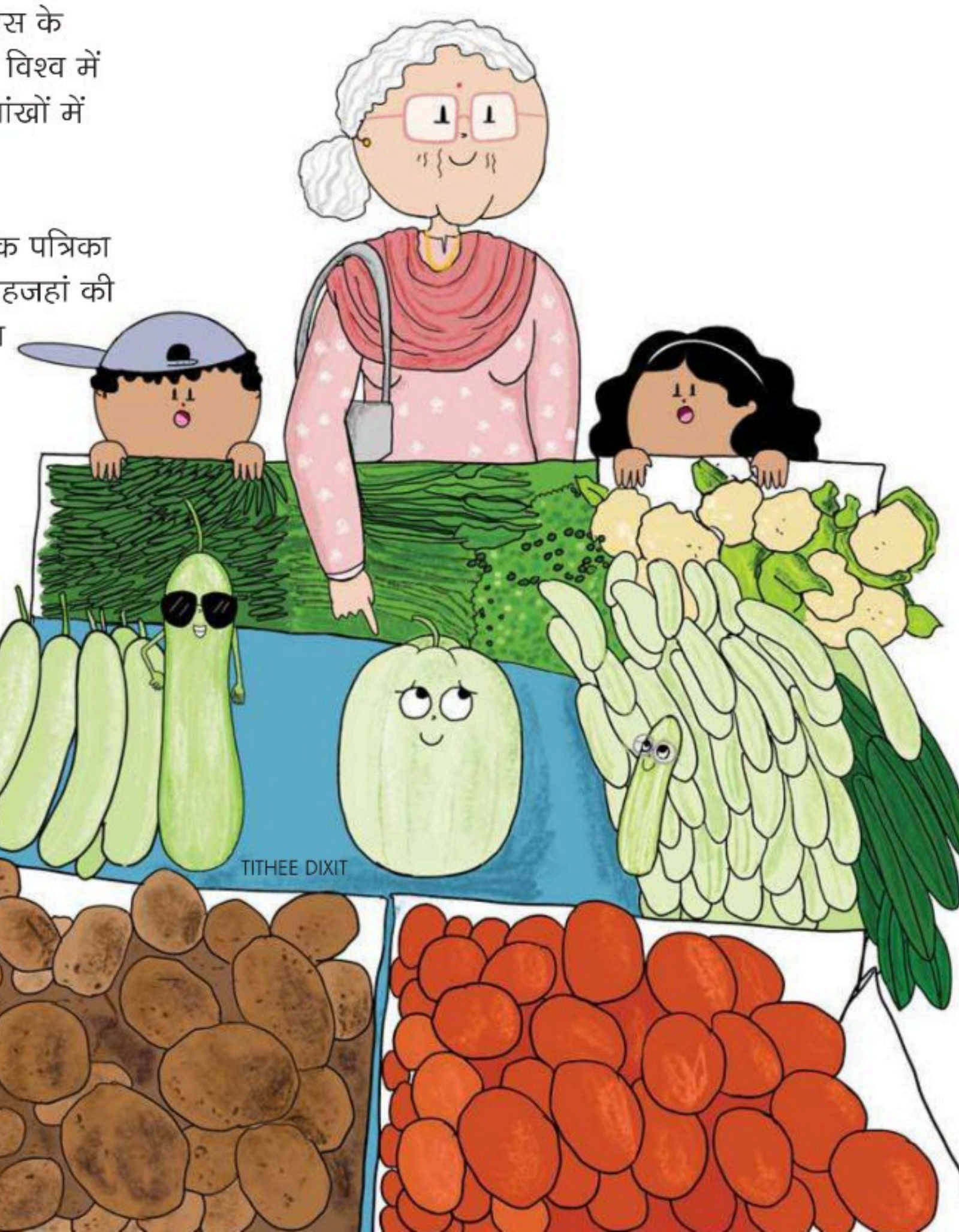

बताओ तो जानें

1. जाड़े के मौसम में
मैं बहुत गिरती हूं
लेकिन मैं कभी भी
घायल नहीं होती हूं.

2. अगर तुम मुझे खिलाओगे
मैं बड़ा हो जाऊंगा
लेकिन अगर तुम ने मुझे
पानी दिया तो मर जाऊंगा.

3. मेरा एक सिर है
बड़ा सा एक धड़ है
मेरे चार पैर भी हैं
लेकिन मैं जिंदा नहीं हूं.

4. अपने मिठास के कारण
मैं सभी को भाता हूं
मैं कई प्रकार की होती हूं
हर दावत में आती हूं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. पहला विंटर ओलिंपिक खेल कहां खेला गया था?
(क) इंसब्रुक (आस्ट्रिया)
(ख) लेक प्लेसिड (यूएसए)
(ग) शैमोनिक्स (फ्रांस)
(घ) कैलगेरी (अलबर्टा)

2. माउंट ऐवरेस्ट पर चढ़ने वाली प्रथम महिला कौन थी?
(क) जुनको ताइबेई
(ख) कैरोलिने मिक्कलसन
(ग) वैलेंटिना तेरेस्कोवा
(घ) ऊपरोक्त में से कोई नहीं.

3. पोलियो के टीके को विकसित करने का श्रेय किस को जाता है?
(क) ऐल्ब इ सैबिन
(ख) जौन्स साक
(ग) जे एल बेयर्ड
(घ) जे पारकिंस

4. इन में से आलू किस का रूपांतरित यानी मौडिफाइड रूप है.
(क) जड़ का
(ख) पत्ते का
(ग) फल का
(घ) तने का

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1–ग्ग (बर्फ), 2–आग, 3–बेड, 4–कैंडी (टौफी)
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ग, 2–क, 3–ख, 4–घ.

मजेदार विज्ञान

एक हारमोनियम बनाएं

आइए, ध्वनि के गुणों की खोज करते हैं.

आप को चाहिए :

- आइसक्रीम स्टिक्स
- 4 रबर बैंड्स
- मोटा चार्ट पेपर
- स्कौच टेप

ऐसा करें :

1. एक आइसक्रीम स्टिक की लंबाई तक रबर बैंड को खींच कर फैलाएं.

2. मोटे चार्ट पेपर से 2 इंच माप की दो पट्टियां काट लें.

3. हरेक पट्टी को 3 बार मोड़ें और स्कौचटेप का इस्तेमाल करते हुए दूसरी आइसक्रीम स्टिक के सिरों या छोर से जोड़ दें.

4. दोनों आइसक्रीम स्टिक्स को एकसाथ दबाएं. रबर बैंड की सहायता से दोनों के सिरों एकसाथ बांध दें.

5. आप का हारमोनियम बन कर तैयार है. इस में एक किनारे से हवा फूंकें.

देखें :

जब आप हारमोनियम में हवा फूंकते हैं, तो उस में से बज्जिंग साउंड निकालता है. इस मजेदार हारमोनियम में संगीत बनाने के लिए हवा फूंकें और मनमोहक ध्वनि का आनंद लें.

सोचें :

आइसक्रीम स्टिक हारमोनियम किस तरह संगीत उत्पन्न करती है?

ध्वनि ऊर्जा का एक रूप है जो कंपन से उत्पन्न होती है. जब यह आप के कानों तक जाती है, तो यह आप के कान के परदे को कंपकपाती है और आप का मस्तिष्क इस कंपन का ध्वनि के रूप में अनुवाद करता है.

हमारे इस प्रयोग में जब हम हारमोनियम में हवा फूंकते हैं, तो अंदर की ओर का रबर बैंड हवा की शक्ति से कंपन करता है. यह कंपन हवा से हो कर यात्रा करता है और हमारे कान के परदे पर चोट करता है. तब हमारा परदा कंपन करता है और मस्तिष्क इस कंपन को एक भिनभिनाने वाली ध्वनि में बदल देता है जिसे हम समझ सकते हैं.

पता करें :

हारमोनियम किस तरह से काम करती है?

एक हारमोनियम हमारी आइसक्रीम स्टिक हारमोनियम की तरह ही काम करती है. इस में फर्क सिर्फ इतना है कि एक कंपन करने वाला एक रबर बैंड इस के अंदर है, जबकि एक सामान्य हारमोनियम के अंदर धातु के बने बहुत से इस तरह के बैंड होते हैं. ये कांपने वाली धातु के बैंड्स रीड्स यानी कंपिका कहलाती हैं. ये कंपिकाएं अलगअलग लंबाई की होती हैं और इसी वजह से ये अलगअलग ध्वनियों या कंपन को उत्पन्न करती हैं, जब इन से हो कर हवा को फूंका जाता है. ऐसा कर के आप लगभग 19 अलगअलग किस्म की ध्वनियों यानी सुरों को हारमोनियम में उत्पन्न कर सकते और बजा सकते हो.

औनलाइन दशहरा

कहानी • आशा शर्मा

नील को दशहरे का त्योहार बहुत पसंद है, क्योंकि इस दिन स्कूल की छुट्टी होती है और शाम के समय दादाजी उसे पास वाले मैदान में रावण के पुतले का दहन दिखाने ले जाते हैं. साथ ही मेले में तरहतरह के झूले झूलने और चटपटी चाटपकौड़ी भी खाने को मिलती है.

नील की रावण के पुतले के दहन में अधिक रुचि नहीं थी, उसे तो दहन से पहले राम और रावण बने लोगों की आमनेसामने तीरकमान वाली लड़ाई देखने में बहुत आनंद आता था.

हर साल वह भी स्कूल के बाद अपने दोस्तों के साथ तीरकमान वाला खेल खेलता है, लेकिन पिछली बार कोरोना वायरस के कारण रावण के पुतले का दहन हुआ ही नहीं था और दोस्त भी आपस में नहीं मिल पा रहे थे इसलिए उस का दशहरा बिलकुल भी मजेदार नहीं रहा था. पहले जहां बच्चों को एकएक छुट्टी का इंतजार रहता था वहीं कोरोना के कारण हुई लंबी छुट्टियों ने सब को बोर कर दिया है.

नील ने दशहरा मनाने की ठान ली, चाहे कुछ भी हो जाए. यहां तक कि लौकडाउन भी उसे नहीं रोक

पाएगा. उसे बस एक योजना बनानी थी. नील लगातार अपना दिमाग दौड़ा रहा था. एक दिन उस के दिमाग में एक विचार आया. उस ने अपने हाथ की उंगलियों को चटकाया और खुशी से उछल पड़ा.

औनलाइन क्लासेज होने के कारण अब लगभग हरेक बच्चे के पास स्मार्ट फोन और इंटरनैट कनैक्शन की सुविधा है. नील ने शाम को 5 बजे अपने सभी दोस्तों के साथ एक वर्चुअल मीटिंग की योजना बनाई.

रमन, सीमा, आयुषी, महक, विनय सहित लगभग 10 दोस्त इस मीटिंग से जुड़ गए.

‘‘नील, आप ने इमरजेंसी मीटिंग क्यों बुलाई है?’’ महक ने पूछा.

‘‘हांहां, बताओ, आप के पास कोई खास सुझाव है क्या?’’ रमन ने भी उत्सुकता से पूछा.

‘‘मैं आप को बताता हूं, जरा सांस तो ले लो,’’ नील ने हंसते हुए कहा. सब बच्चे उस का चेहरा देख रहे थे.

‘‘फ्रैंड्स, क्या किसी के पास दशहरे का कोई प्लान है?’’ सब ने ना में सिर हिला दिया.

‘‘रावण दहन तो होने वाला नहीं है, फिर कैसा दशहरा,’’ रमन ने मायूसी से कहा.

‘‘मेरे पास एक प्लान है . क्यों न हम औनलाइन सैलिब्रेशन करें,’’ नील ने चहकते हुए कहा. सब उसे हैरानी से देख रहे थे.

‘‘औनलाइन दशहरा? वह कैसे?’’ आयुषी ने पूछा.

नील ने सब को अपना प्लान बताया. जैसेजैसे नील बताता जा रहा था वैसेवैसे सब के चेहरे खिलते जा रहे थे. अंत में सब की सहमति के बाद मीटिंग खत्म कर दी गई और दशहरे वाले दिन शाम को औनलाइन सैलिब्रेशन करना तय हुआ. सब ने अपनेअपने किरदार चुने.

नील राम बना तो रमन रावण. योजना के अनुसार दोनों ने अपनेअपने सामने

वाली दीवार पर एकएक पुतले बना कर टांग दिए. उन्हें इसी पुतले को लक्ष्य बना कर तीर चलाने थे. आयुषी सीता बनी थी और विनय को लक्ष्मण का रोल मिला. चिंटू भी अपना मुंह लाल कर और लंबी पूंछ लगा कर हनुमान बन गया. वह बारबार मोटे कागज से बनी गदा हवा में लहरा रहा था.

दशहरे का कार्यक्रम शुरू हो गया. रमन ने राम को मारने के लिए दीवार पर लगी डमी पर तीर चलाया. राम बने नील ने तीर से बचने का अभिनय किया और अपना धनुष संभाल लिया. अब नील ने रावण की तरफ बाण चलाया. रमन ने भी बचने का अभिनय किया. इसी तरह सभी मित्र अपनेअपने घर पर बैठे वर्चुअल पुतलों पर निशाने लगा रहे थे. हनुमान की तरह मुखौटा लगाए चिंटू अपनी पूंछ हिलाता स्क्रीन पर घूमता दिखाई दे रहा था. शेष मित्र उन का अभिनय देख कर आनंदित हो रहे थे. हर तीर के चलने और निशाना चूकने पर जोरदार जयकारे सुनाई दे रहे थे.

तभी नील ने जोर से ललकारा, ''रावण, तुम्हारा अंतिम समय आ गया है. लो, संभालो मेरा वार,'' कहते हुए नील ने पूरी ताकत लगा कर कमान को खींचा और दीवार की तरफ निशाना लगा कर तीर छोड़ दिया.

रमन ने घायल हो कर गिरने का अभिनय किया. सब लोग सांस रोक कर अगले दृश्य का इंतजार कर रहे थे. तभी सब ने देखा कि नील ने अपनी आंखों पर हाथ रख कर उन्हें ढक लिया. वह मंदमंद मुसकरा भी रहा था.

''क्या हुआ?'' सब ने एकसाथ पूछा. नील ने मोबाइल का बैक कैमरा चालू कर दिया. सामने जो

ANANYA PRADHAN

दृश्य दिखा उस के साथ ही सब के ठहाके भी गूंज उठे.

स्क्रीन पर नील के छोटे भाई की नंगी पीठ दिख रही थी. दरअसल, जब नील ने दीवार की तरफ निशाना लगा कर तीर चलाया उस समय उस का छोटा भाई नहा कर बाथरूम से बाहर निकल रहा था और उस ने अपने शरीर पर तौलिया लपेटा हुआ था. नील का तीर दीवार के सामने आए छोटे भाई के हाथ पर लगा और घबराहट में उस के हाथ से तौलिया छूट कर जमीन पर गिर गया.

नील के भाई को जैसे ही पता चला कि वह कैमरे के सामने है, वह झेंपता हुआ अंदर कमरे में भाग गया. दोस्त लोग अब भी हंसे जा रहे थे.

खेल में रुकावट आने से हालांकि मजे का क्रम टूट गया, लेकिन फिर भी सब ने औनलाइन दशहरे का आनंद तो लिया ही था.

बच्चे एकदूसरे की तरफ हाथ हिलाते हुए मीटिंग लीव करने लगे. बच्चे बहुत खुश थे और रिलैक्स महसूस कर रहे थे.

उन्होंने एकदूसरे की तरफ हाथ हिलाया और खुशी और तनावमुक्त महसूस करते हुए बैठक से निकलने लगे. ●

मोमो चूहे की मदद करें

15 अक्तूबर को दशहरा है. इसे बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है. मौरी राक्षस ने मोमो चूहे को अपने जाल में फंसा रखा है, जिसे उस के चंगुल से भागने के लिए 4 कमरों की पहेलियों को सुलझाना पड़ेगा. मोमो को आजाद होने में उस की सहायता कीजिए और एक बार फिर इस तरह से बुराई पर अच्छाई की जीत को सफल बनाइए.

शुरू से आखिर तक के लिए एक रास्ता ढूंढ़ें.

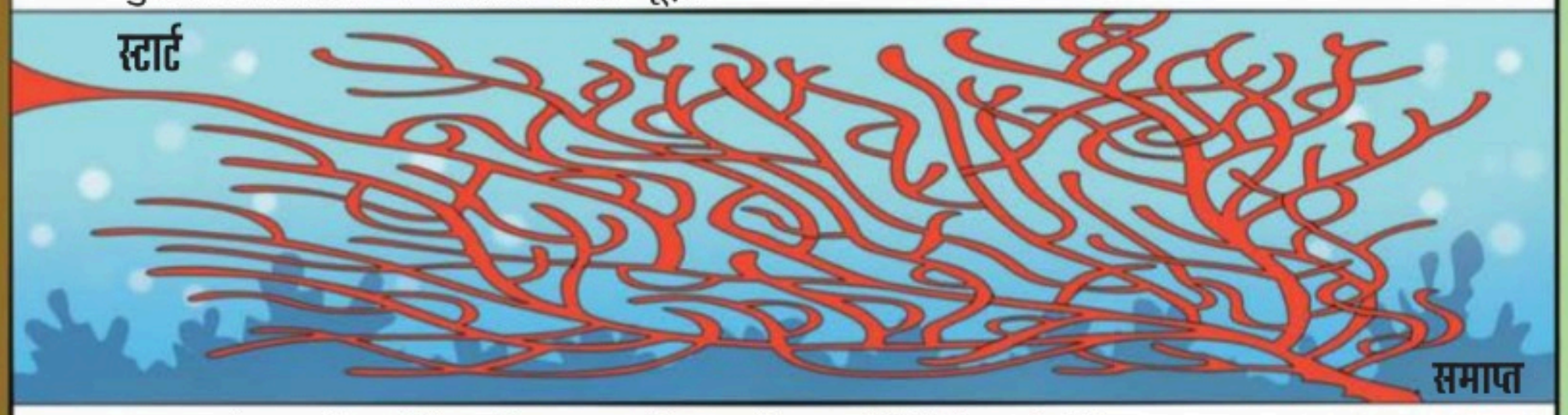

हुलू ग्रह के 3 एलियनों के शरीर पर एक निशान है. इन में से बेमेल को ढूंढ़ें.

4 जूते, चाभी, एक जोड़ा सनग्लासेस, 4 दस्ताने, 4 किताबें, एक औरेंज कलर की जुराब, एक कैक्टस, एक पैंसिल और एक डायनासौर को ढूंढ़ें.

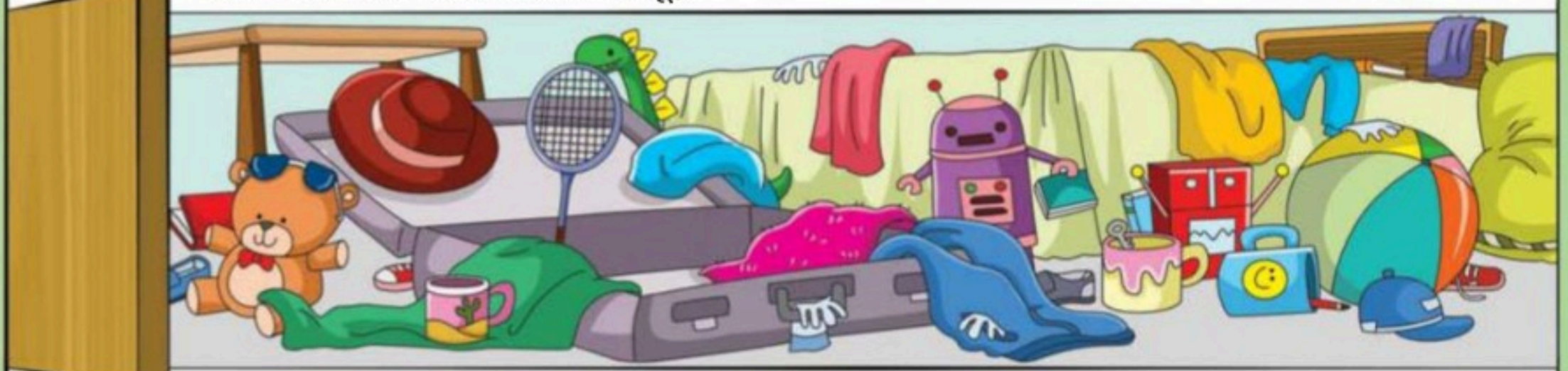

सिर्फ एक को छोड़ कर प्रत्येक पिज्जा एक समान जोड़ी है. इसे ढूंढ़ें.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

फन्नी सुधर गया

कहानी • एस वरालक्ष्मी

फन्नी लोमड़ सुंदरवन में रहता था. वन के अन्य जानवरों को परेशान करना उस की पसंदीदा शरारतों में से एक था. इसलिए जानवर उस से बातचीत करने से दूर भागते रहते थे. जो जानवर उस के व्यहार से अनजान थे, उन्हें इस का खामियाजा भुगतना पड़ता था.

एक दिन उस ने स्थानीय यानी लोकल मार्केट जाने का निर्णय किया.

जब वह मार्केट के निकट पहुंचा, तो उस ने अपनी सींग के किनारे वाले चश्मे को ठीक किया जो उस की नाक से नीचे खिसक कर गिर गया था. उस ने चारों ओर देखा.

उस ने टौफी की एक दुकान देखी और वह उस दुकान पर गया.

बोबो भालू ने फन्नी का मुसकराते हुए गर्मजोशी के साथ स्वागत किया क्योंकि फन्नी उस का उस दिन का पहला ग्राहक था.

उस ने पूछा, ''आप क्या पसंद करेंगे, सर?'' फन्नी ने शीशे के जार में मिक्स की हुई टौफियों के साफसुथरे डिस्पले यानी प्रदर्शन को देखा और पूछा, ''आप के पास कितने फ्लेवर की टौफियां हैं?''

बोबो भालू ने गर्व से कहा, ''लगभग 60 के करीब हैं, सर.''

फन्नी ने फिर पूछा, ''कितने फ्लेवर्स?'' दुकानदार रट्टू तोते की तरह कहने लगा, ''वेनिला, स्ट्रौबेरी चौकलेट, आम...''

जब तक उस ने टौफियों के आखिरी फ्लेवर का नाम गिनाया तब तक उस की सांसें थम चुकी थीं.

उस ने कहा, ''मुझे लग रहा है सर कि आप अपने बच्चों के लिए टौफियां खरीद रहे हैं. मैं आप को सुझाव दे सकता हूं. आप थोड़ाथोड़ा सबकुछ खरीद कर देख सकते हैं,'' उस के बाद उस ने आशा के

साथ पूछा, ''तो हां सर, कौन से फ्लेवर आप खरीदना पसंद करेंगे? आप के लिए मैं कितना पैक कर दूं?''

फन्नी ने अपना सिर हिलाया और कहा, ''हम्म, सौरी, लेकिन मुझे कोई सा भी नहीं चाहिए.''

बोबो यह सुन कर चकराया और जोर से चिल्लाते हुए बोला, ''लेकिन क्यों सर?''

फन्नी मुसकराया और उस ने जवाब दिया, ''ओह, मैं तो सिर्फ यह जानने को उत्सुक था कि तुम्हारे पास कितने प्रकार के फ्लेवर थे. बस, इतना ही. दूसरी बात, मेरा कोई बच्चा नहीं है और तीसरी बात, मैं टौफी नहीं खाता हूं.''

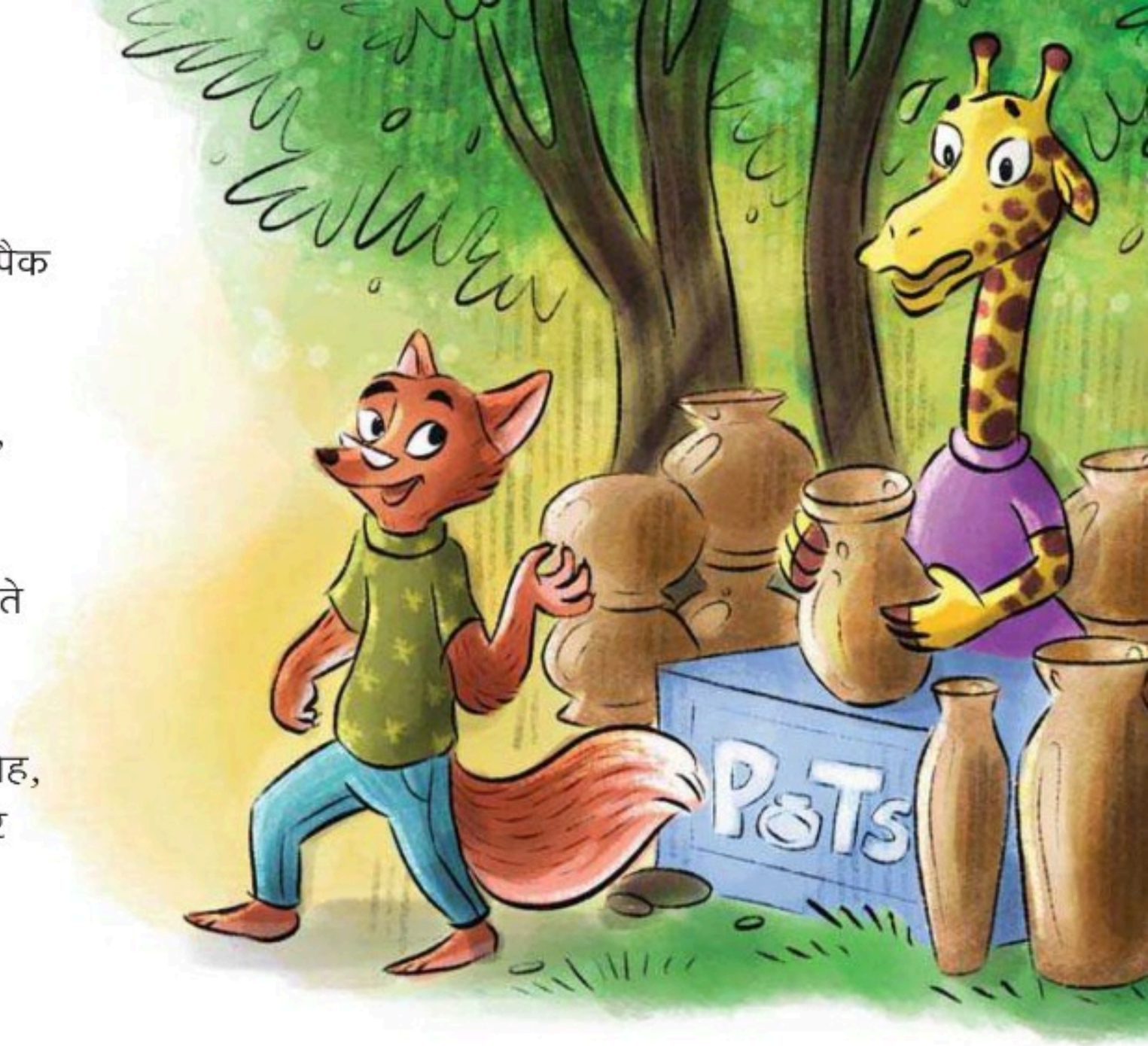

यह कहते हुए वह खुशी से दुकान से बाहर चला गया और बोबो भालू को निराशा में अपने बाल नोचने के लिए छोड़ दिया.

उस के बाद फन्नी घड़ा विक्रेता जिन्नी जिराफ की दुकान पर गया.

फन्नी वहां पर एक मिनट के लिए खड़ा रहा. उस के बाद उस ने घड़ों का मुआयना किया.

उस ने पूछा, एक घड़े की कीमत क्या है?''

जिन्नी जिराफ ने जवाब दिया, ''100 रुपए, सर.''

फन्नी ने हैरान हो कर पूछा, ''क्या, 100 रुपए? यह तो बहुत ज्यादा है. तुम तो चांद तोड़ने की बात कह रहे हो.''

जिन्नी जिराफ ने एक पल के लिए सोचा और फिर जवाब दिया, ''ओके, मैं इसे आप को 90 रुपए में दे दूंगा.''

फन्नी ने अपना सिर हिलाया और कहा, ''नहीं, नहीं, यह अभी भी बहुत ज्यादा है.''

कुछ देर तक मोलभाव करने के बाद जिन्नी जिराफ ने दृढ़ता के साथ कहा, ''मैं इसे आप को 75 रुपए में दे दूंगा. यह मेरा आप लिए अंतिम औफर है.''

फन्नी ने सिर हिलाया और कहा, ''ओके, धन्यवाद.''

ऐसा कहते हुए फन्नी दुकान से बाहर जाने के लिए मुड़ गया.

जिन्नी जिराफ ने उसे पुकारा, ''सर, क्या आप घड़ा नहीं खरीद रहे हैं?''

फन्नी ने अपना सिर हिलाया और मुसकरा कर बोला, ''नहीं.''

जिन्नी जिराफ ने झुंझलाते हुए पूछा, ''क्यों नहीं, सर?''

फन्नी ने जवाब दिया, ''अरे, मैं सिर्फ यह जानना चाहता था कि इसे कितना सस्ता खरीद सकता हूं, बस मेरा इतना ही मतलब था.''

यह सुन कर जिन्नी जिराफ काफी नाराज हो गई,

लेकिन वह कुछ भी नहीं बोल सकी और मन ही मन खीझ कर रह गई.

ऐली हाथी, जो गायें बेच रहा था, यह सबकुछ दूर से देख रहा था.

गायों को देखने पर फन्नी को याद आया कि उस की पत्नी ने उसे मार्केट से एक गाय खरीद कर लाने को कहा था और वह इस बात को जानता था कि अगर वह गाय खरीदना भूल गया तो उन की पत्नी बहुत ज्यादा गुस्सा करेगी.

इसलिए फन्नी तेजी से ऐली के पास गया और बोला, ''वह एक अच्छी गाय दिख रही है. असल में मुझे ठीक इसी तरह की गाय की तलाश है. आप ने इस की कितनी कीमत रखी है?''

ऐली ने जवाब दिया, ''आप इस की कितनी कीमत देना चाहते हैं?''

फन्नी ने एक पल के लिए सोचा और कहा, ''मैं 1 हजार रुपए दे सकता हूं.''

''यह तो बहुत ही कम है, सर,'' और उस ने अपना सिर हिलाया.

फन्नी अपना औफर स्वीकार न किए जाने से ऐली हाथी से बहुत नाराज हो गया. उस का मन कर रहा था कि वहां से चला जाए, लेकिन खाली हाथ घर लौट आया देख पत्नी का गुस्से से तमतमाया चेहरा याद कर उसे डर लग रहा था. इसलिए उस ने गाय की कीमत बढ़ानी जारी रखी, जिस का वह भुगतान कर सकता था.

अंत में फन्नी ने बेमन से कहा, ''ओके, मैं तुम्हें 1,500 रुपए दूंगा.''

लेकिन ऐली ने फिर उस के औफर को ठुकरा दिया.

असहाय फन्नी ऐली के साथ मोलभाव करता रहा और अंततः बोला, ''मैं तुम्हें 3 हजार रुपए से ज्यादा नहीं दूंगा, क्योंकि मेरे पास इतने ही रुपए हैं. इसलिए 3 हजार रुपए में सौदा पक्का करो. यह रहे रुपए और मुझे गाय दे दो.''

लेकिन आश्चर्य की बात थी, ऐली ने रुपए नहीं लिए.

उस ने दृढ़ता से कहा, ''मैं इस गाय को नहीं बेच रही हूं.''

फन्नी हैरान था.

वह चिल्ला उठा, ''गाय नहीं बेच रही हो, तुम्हारा क्या मतलब है? तब तुम मेरे साथ मोलभाव क्यों कर रही थी?''

ऐली मुसकराई और शांति से बोली, ''मैं तो सिर्फ यह जानना चाहती थी कि यह गाय मुझे कितना मुनाफा दिला सकती है, बस और कुछ नहीं.''

फन्नी खुद को गूंगा महसूस करने लगा. वह अपने ही खेल में जीवन में पहली बार खुद को मात खाता देख रहा था. कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि इस सबक के बाद उस ने एक नई शुरुआत करने की सोची और अन्य जानवरों को परेशान करना छोड़ दिया. वह अब बदल चुका था. ●

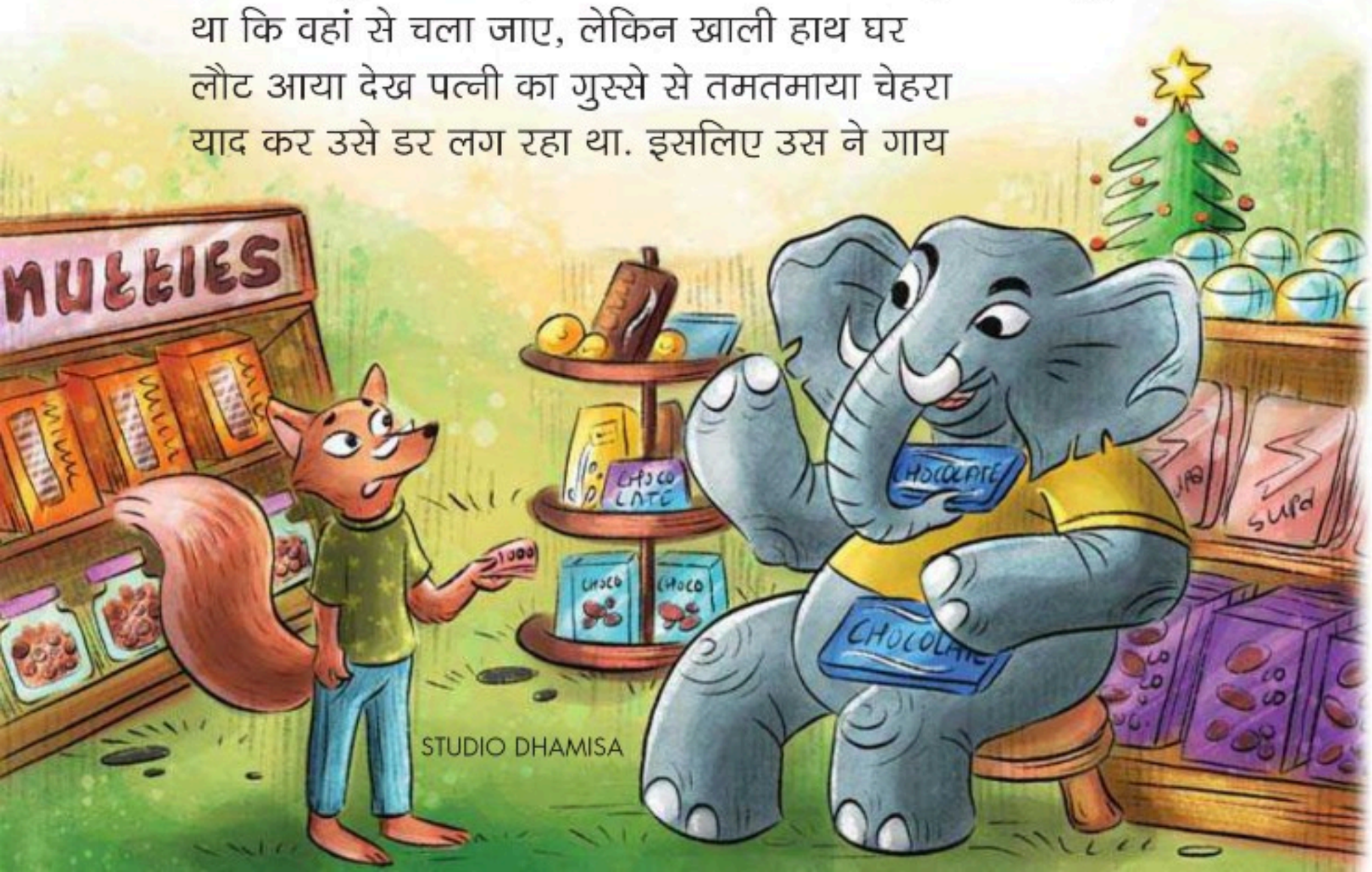

मधुमक्खियों के घर खोजो

मधुमक्खियों को उन के घर का रास्ता दिखाने के लिए योगों को हल करें.

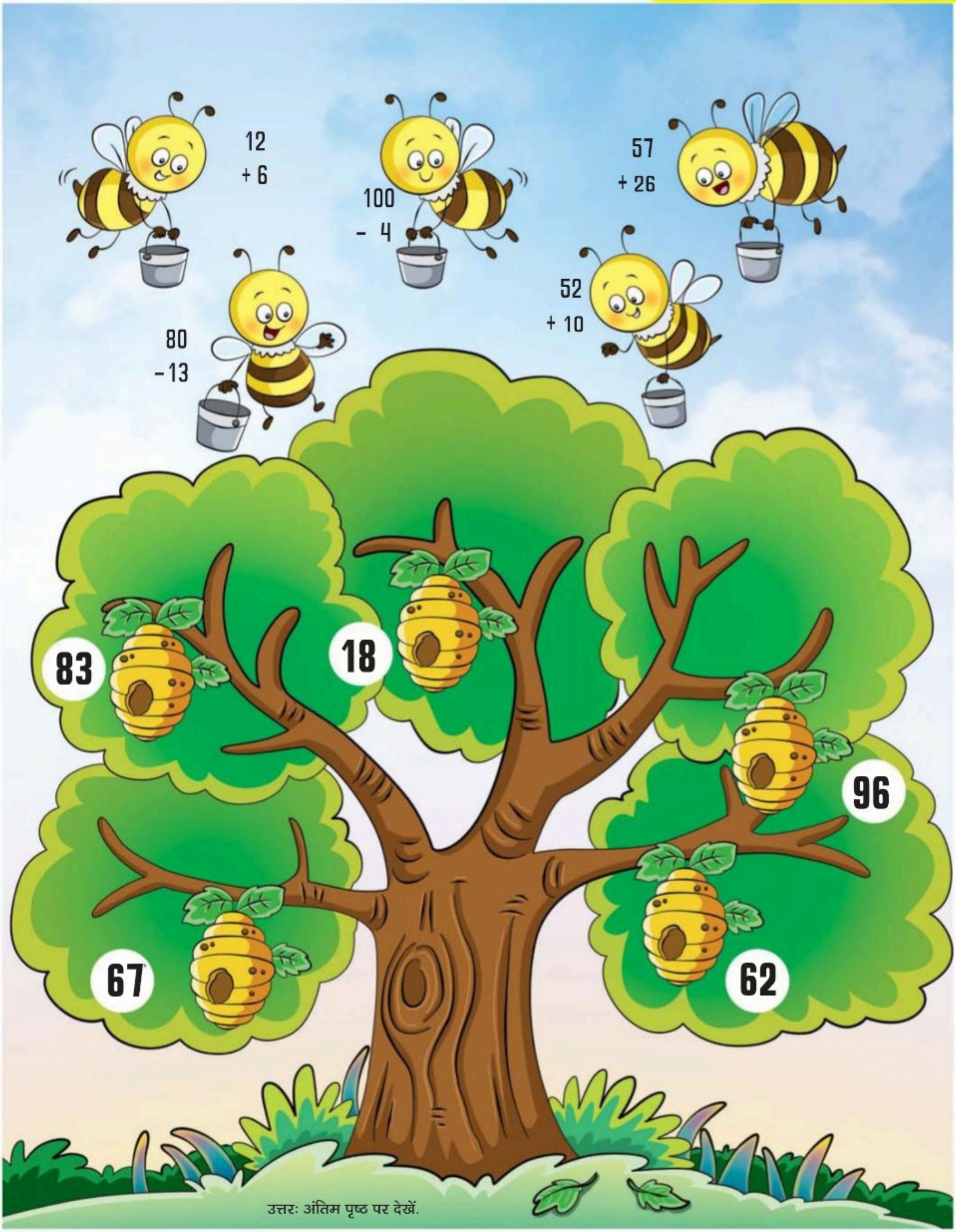

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चीकू

चित्रकथा : दास

चीकू और मीकू पहाड़ की ढलान पर जा रहे थे, तभी एक बड़ा बोल्डर यानी शिलाखंड उन की ओर नीचे लुढ़क कर आने लगा.

मीकू, भागो, नहीं तो उस शिलाखंड से तुम कुचल जाओगे.

जब वे दौड़ रहे थे, तो उन के पांव फिसले और वे गहरे गड्ढे में जा गिरे.

हम बोल्डर यानी शिलाखंड से बच गए हैं.

लेकिन हम तो इस गड्ढे में फंस गए हैं.

ठीक उसी समय एक लोमड़ी शिकार की तलाश में घूम रही थी.

एक भी शिकार नहीं दिखा.

पास से ही एक हाथी जा रहा था.

मैं ने इस हाथी के रुपए चुराए थे. अगर इस ने मुझे देख लिया तो बहुत मारेगा. मुझे यहां से भाग लेना चाहिए.

जब लोमड़ी दौड़ रही थी, तो वह भी उसी गड्ढे में जा गिरी जिस में चीकू व मीकू थे.

अरे, यह लोमड़ी कहां से आ गई.

अरे, दो शिकार एकसाथ, अब मैं दोनों को खाऊंगी.

ठहरो, सब से पहले यह सोचो कि तुम इस गड्ढे से बाहर कैसे निकलोगी.

अरे हां, मैं तो इतनी ऊंची नहीं कूद सकती हूं.

हम सब के सब यहां फंस गए हैं. हमें सब से पहले बाहर निकलने का तरीका सोचना चाहिए.

मैं कुछ भी नहीं सोच सकती हूं.

मेरे पास एक आइडिया है.

मुझे जल्दी से बताओ.

सब से पहले हमें मीकू को बाहर निकालना चाहिए.

हां, उस के बाद मैं भी तुम दोनों को बाहर निकालने में मदद करूंगा.

ओके, लेकिन हम उसे बाहर कैसे निकालेंगे?

मीकू, मेरे कंधे पर चढ़ जाओ और उस के बाद मैं लोमड़ी के कंधे पर चढ़ जाऊंगा. इस तरह कम से कम तुम बाहर निकलने में समर्थ हो जाओगे.

योजना के अनुसार मीकू बाहर निकल आया.

एक हाथी पास से गुजर रहा है. मैं मदद के लिए उसे पुकारूंगा. प्लीज, हमारी मदद करो.

हाथी ने पेड़ की एक डाल को गड्ढे में नीचे कर दिया और दोनों को बाहर खींच लिया.

आप का बहुतबहुत धन्यवाद.

अरे नहीं, यह हाथी फिर से आ गया. मुझे तुरंत भाग लेना चाहिए.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र को पूरा करें.

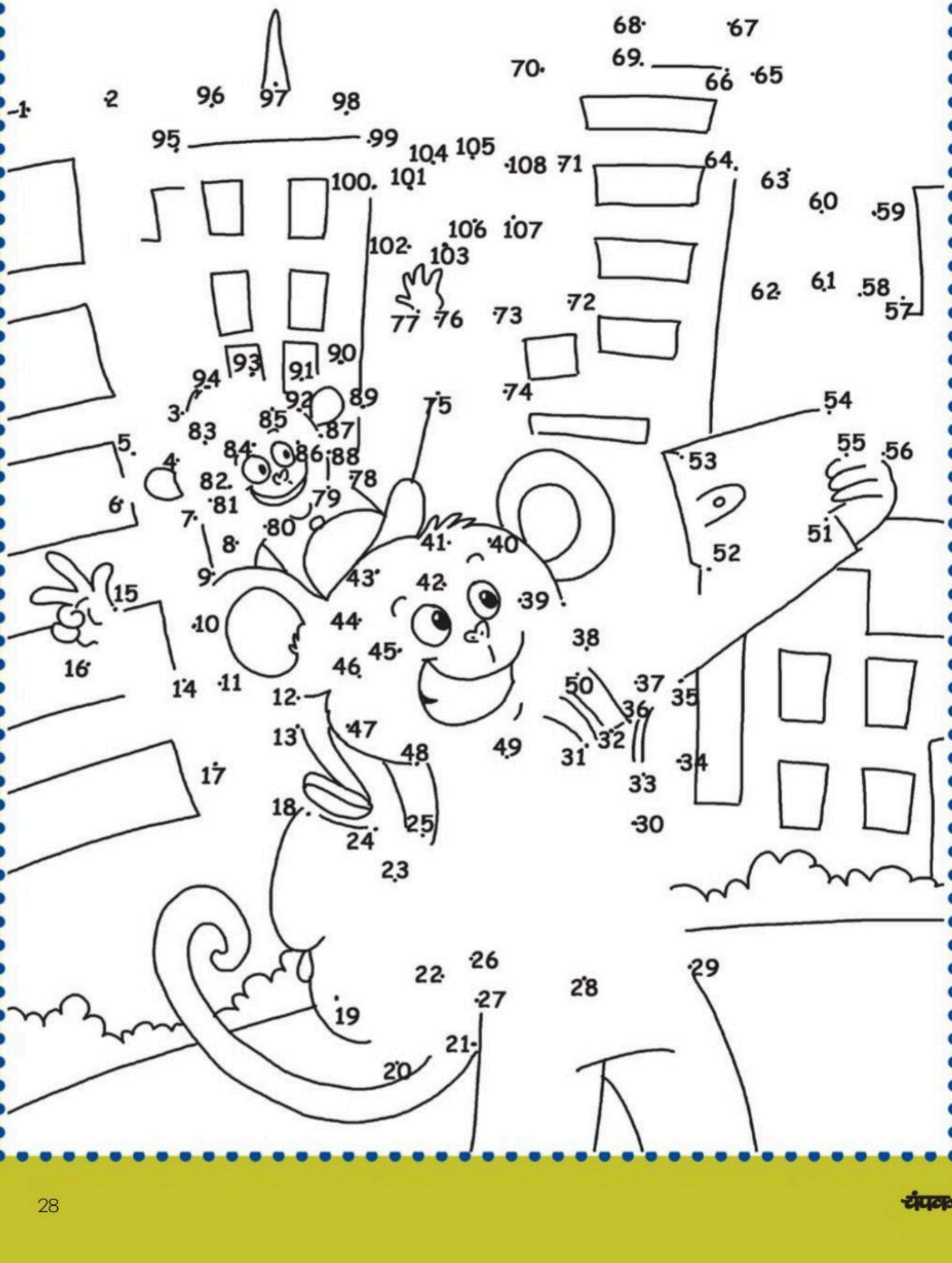

छिपे चित्र ढूंढ़ें

20 अक्तूबर को अंतर्राष्ट्रीय रसोइया दिवस है. एक दर्जन अंडे, 5 प्याज, 3 टमाटर और एक पैन यानी कटोरा ढूंढ़ने में रसोइया कोको कंगारू की मदद कीजिए

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बुराई पर विजय

कहानी ● वंदना गुप्ता

यमुना बिहार हाउसिंग सोसायटी में रहने वाले कुछ बच्चों की मीटिंग चल रही थी. इन सब की उम्र 10 से 13 साल के बीच थी.

''दशहरा मनाने के लिए इस बार हमें अपनी सोसायटी में क्या करना चाहिए?'' आर्यन ने पूछा.

''चलो, मेला लगाएंगे,'' अमित ने सुझाव दिया.

''पिछले साल भी हम ने मेला लगाया था, इस बार हम कुछ अलग करेंगे,'' जूही बोली.

''तो रामलीला का मंचन करते हैं, मेघा जोश में भर कर बोली.

''उस के लिए स्टेज, ड्रैसेज, मुखौटे, म्यूजिक और काफी प्रैक्टिस की जरूरत है. बहुत कुछ चाहिए. दशहरा आने में केवल 5 दिन बाकी हैं, न हमारे पास इतने पैसे हैं न समय कुछ और सोचो,'' नीतू ने कहा.

''क्यों न इस बार अपनी सोसायटी में रावण का पुतला जलाएं,'' नेहा बोली.

''वह भी तो बहुत महंगा मिलेगा और इतना बड़ा रावण खड़ा करने के लिए हमें बड़ों की मदद लेनी पड़ेगी पर हम जो भी करेंगे खुद करेंगे,'' आर्यन बोला.

''हम क्यों न एक छोटा सा रावण का पुतला खुद बनाएं,'' मेघा ने सुझाव दिया.

''हमें पुतला बनाना कहां आता है,'' सोनू ने कहा.

''इंटरनैट से मदद लेते हैं,'' जूही ने राय दी.

यह राय सब को पसंद आई. इंटरनैट पर रावण का पुतला बनाना सीखने के लिए वीडियो देखे गए.

''यह तो बहुत आसान है, हम बना लेंगे,'' बच्चे जोश में भर कर बोले.

''चलो, फिर अभी से काम में जुट जाते हैं,'' अमित ने कहा.

जल्दी ही जरूरी सामान इकट्ठा कर के वे रावण का पुतला बनाने में लग गए. सब से पहले उन्होंने बांस की पतलीपतली स्टिक्स काटीं फिर उन्हें तार से बांध कर दो बड़े व एक छोटा गोला बनाया. बड़े गोले के नीचे के घेर व कंधों के लिए थे तथा छोटा कमर के लिए था.

अब बांस की ही लंबीलंबी स्टिक्स काट कर गोलों के चारों तरफ बांधी गईं और बीच में छोटा व किनारों पर बड़े गोले बांध कर रावण के शरीर को आकार दे दिया गया.

''अब इसी तरह स्टिक्स से हाथ व पैर भी बनाएंगे,'' सोनू बोला.

''चलो, पैर नहीं बनाते, क्योंकि रावण को खड़ा करने में संतुलन बिगड़ेगा, नीचे घेर ही रहने देते हैं,'' नेहा ने सुझाव दिया.

सब को यह विचार बहुत पसंद आया. हाथ बनाने के बाद बच्चे दो टीमों में बंट गए. मेघा व जूही गत्तों से रावण के 10 सिर बनाने लगीं. बाकी बच्चे शरीर पर पुराने अखबार चिपका कर ढांचा तैयार करने लगे.

मेघा व जूही ने बड़ीबड़ी मूंछें, डरावनी आंखें व बड़ेबड़े दांतों वाले 10 चेहरे तैयार किए.

पुतले को बनता देख कर छोटे बच्चे काफी उत्साहित हुए. वे बोले,''हम भी रावण बनाने में आप की मदद करना चाहते हैं.''

अक्तूबर (द्वितीय) 2021

यदि तुम वास्तव में कुछ करना चाहते हो तो सोसायटी के हर घर जा कर बता दो कि दशहरे पर शाम को 6 बजे हम यमुना विहार हाउसिंग सोसायटी के पीछे वाले मैदान में रावण दहन करेंगे. सभी लोग समय से पहले वहां पहुंच जाएं और रावण दहन देखें. सभी को उत्सव में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है.

''ऐसा तो हम कर देंगे पर हमें रावण बनाने में भी मदद करनी है,'' मेरी ड्राइंग बहुत अच्छी है,'' मीनू बोली.

''मुझे तलवार बनानी आती है,'' गुड्डू ने बताया.

''ठीक है, तुम लोग तलवार व ढाल बना कर लाओ, हमें अच्छी लगी तो रावण के हाथों में थमा देंगे,'' आर्यन ने कहा तो छोटे बच्चे खुश हो कर भाग गए.

नेहा और आर्यन ने रावण के शरीर के ऊपरी भाग में

अखबार के ऊपर काले कागज चिपका दिए तथा नीचे के घेर में हरे, लाल, पीले कागजों से डिजाइन बना कर पोशाक का रूप दे दिया. किनारों पर गोल्डन व सिल्वर कलर के कागज लगाने से वह बहुत सुंदर दिख रहा था.

मेघा व जूही ने 10 सिरों को शरीर में जोड़ दिया.

''तुम ने कागज चिपकाने से पहले रावण के पुतले में पटाखे तो भर दिए थे न?''

''हम ने दसों सिरों में भरे हैं,'' मेघा बोली.

''हां, हां, भर दिए. वह भी इकोफ्रैंडली जिस से प्रदूषण न फैले,'' नेहा ने बताया.

''बस, थोड़ा सा पेट खुला छोड़ दिया है,'' आर्यन बोला.

''वह क्यों?'' जूही ने पूछा.

''वहां मैं एक रंगबिरंगी चकरी लाऊंगा. वह दुकानदार के पास अभी उपलब्ध नहीं थी, वह कह रहा था कल तक मंगा कर देगा.''

''फिर तो जलता हुआ रावण बहुत ही सुंदर लगेगा. वास्तव में बहुत मजा आने वाला है,'' सोनू खुश हो कर बोला.

''4 दिन की मेहनत के बाद आखिर रावण का पुतला लगभग तैयार था. बस, अब तो इस के पेट में चकरी लगा कर उसे खड़ा करना रह गया था. हम ने समय से पहले ही काम पूरा कर लिया,'' अमित खुश हो कर बोला.

''हमारी बनाई तलवार और ढाल भी तो आप को लगानी है,'' छोटे बच्चे बोले, जो बड़े उत्साह से खड़े हो कर रावण बनता देख रहे थे.

''हां भई, उन के बिना तो रावण जंचेगा ही नहीं,'' नेहा ने कहा तो बच्चे खुश हो गए.

''चलो, अब खाना खाने चलते हैं, शाम को मैं और सोनू चकरी लेने जाएंगे,'' आर्यन ने कहा और सभी बच्चे अपनेअपने घरों को चले गए.

मेघा की बालकनी से सोसायटी के पीछे का मैदान दिखाई देता था. वह अपनी खाने की प्लेट ले कर बालकनी में आ गई और लेटा हुआ रावण का पुतला देख कर खुश हो रही थी कि तभी एक आदमी हाथ में लेडीज पर्स लिए भागता हुआ वहां आया और इधरउधर देखने लगा. उस ने रावण के पुतले के पेट में खाली जगह देखी तो पर्स वहां रख दिया और तेजी से दीवार फांद कर भाग गया.

इस से पहले कि मेघा कुछ समझ पाती एक 12-13 साल का लड़का भागता हुआ आया और किसी को खोजने लगा. कुछ ही देर में वहां एक परेशान सी महिला जो शायद उस की मां थी आई और बोली, ''संजू लुटेरा मिला?''

''वह आया तो इधर ही था पर पता नहीं कहां

गायब हो गया,'' लड़का बोला.

इधरउधर देखने के बाद वे दोनों वापस लौटने लगे तभी मेघा चिल्लाई, ''रुकिए, आप किसे खोज रहे हैं?''

''एक आदमी मेरा पर्स छीन कर भाग गया, हम उसे ही खोज रहे हैं,'' महिला ने बताया.

''आप का पर्स किस रंग का है?'' मेघा ने पूछा.

''ब्राउन,'' महिला बोली.

''मुझे पता है वह कहां है?'' मेघा ने बताया तो महिला की आंखों में चमक आ गई.

अब मेघा नीचे जमीन पर आ गई और उस ने अपने साथियों को भी नीचे बुला लिया.

मेघा रावण के पेट से पर्स निकाल कर महिला को देने लगी तो आर्यन ने उसे रोका, ''बुरा मत मानिएगा आंटी, पर्स गलत हाथों में न चला जाए इसलिए पूछ रहे हैं कि आप के पर्स में क्याक्या है?''

महिला ने सब सहीसही बता दिया. बच्चों ने तुरंत उन्हें उन का पर्स सौंप दिया. उन्होंने जल्दीजल्दी पर्स टटोला और सारा सामान ठीक पा कर खुश हो गईं,'' चलो संजू, हमें पहले ही बहुत देर हो गई है.''

संजू अब भी उदास था. वह बोला, ''मां, आप का पर्स तो मिल गया, लेकिन लुटेरा पकड़ में नहीं आया. वह किसी और का सामान छीन कर भागेगा. हो सकता है आप का ही दोबारा ले भागे, उसे पकड़ना भी तो जरूरी है.''

''उसे पकड़ना अब बहुत आसान है,'' नीतू बोली.

''वह कैसे?'' संजू ने पूछा.

''ठीक है, हर कोई जानता है कि कल हम रावण का

पुतला जला रहे हैं. अतः वह उस से पहले जरूर इस के पेट में से पर्स निकालने आएगा.''

''ठीक है, हम सब बारीबारी पहरा दे कर रावण के पुतले पर नजर रखेंगे और चोर को पकड़ेंगे,'' अब अमित भी उत्साह से बोला.

संजू भी वहीं रुक गया. बच्चों ने बारीबारी छिप कर रावण के पुतले पर नजर रखनी शुरू कर दी.

दिन छिपते ही लुटेरा आया और उस ने रावण के पेट में हाथ डाला. उस समय जूही की बारी थी. उस ने शोर मजा कर सब को बुला लिया. लुटेरे को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया.

अगले दिन शाम को उन्होंने हर्षोल्लास से रावण का पुतला फूंका. संजू व उस की मां भी मेले में आए.

बच्चे बहुत खुश थे. वे बोले, ''हमारे रावण ने एक लुटेरे को पकड़वा कर यह साबित कर दिया कि दशहरा बुराई पर अच्छाई की जीत का त्योहार है. यह दशहरा यादगार बन गया.'' ●

चित्र पूरा करें

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

मोंटी का रोबोट

कहानी ● ईशा अग्रवाल

मोंटी बंदर बहुत खुश था. उस के मामा जैकी बंदर ने उस के लिए अमेरिका से एक गिफ्ट भेजा था, जो उसे अभीअभी मिला था.

''पापा, जल्दी से बौक्स खोलो न,'' मोंटी ने बेसब्री से कहा तो उस के पापामम्मी प्यार से हंस पड़े. बौक्स के खुलते ही मोंटी की आंखों में चमक आ गई, ''वाउ, रोबोट.''

वह रोबोट के बटन दबा कर उस से छेड़खानी करने लगा, ''यह औन कहां से होता है? यह कैसे काम करता है?''

मोंटी के पापा डैनी बंदर ने बड़ी मुश्किल से उसे रोका, ''ठहरो, मोंटी बेटा, इंस्ट्रक्शन मैनुअल में लिखा है कि हमें पहले इसे चार्ज करना होगा. इस का चार्जिंग पौइंट कहां है? हां, मिल गया.''

पापा ने रोबोट को चार्जिंग पर लगा दिया.

''मोंटी बेटा, तुम्हारे रोबोट को चार्ज होने में अभी थोड़ा समय लगेगा. तब तक तुम अपने मामा को फोन कर के थैंक्स बोल दो,'' मोंटी की मम्मी डिंपी बंदरिया ने कहा.

मोंटी ने अपने मामा जैकी को फोन मिला कर थैंक्स कहा तो वे बहुत खुश हुए. रोबोट चार्ज होने के बाद जैसे ही पापा ने उस पर लगा औन का बटन दबाया, उस पर लगी हरीनीली सभी लाइटें जल उठीं.

''हैलो, मेरा नाम रोबो है. तुम्हारा नाम क्या है?'' रोबो से एक यांत्रिक आवाज आई.

''मेरा नाम मोंटी है. रोबो क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे?'' मोंटी ने मंत्रमुग्ध हो कर पूछा.

''हैलो मोंटी, रोबो तुम्हारा दोस्त बनेगा,'' रोबो ने कहा तो मोंटी खुशी से झूम उठा.

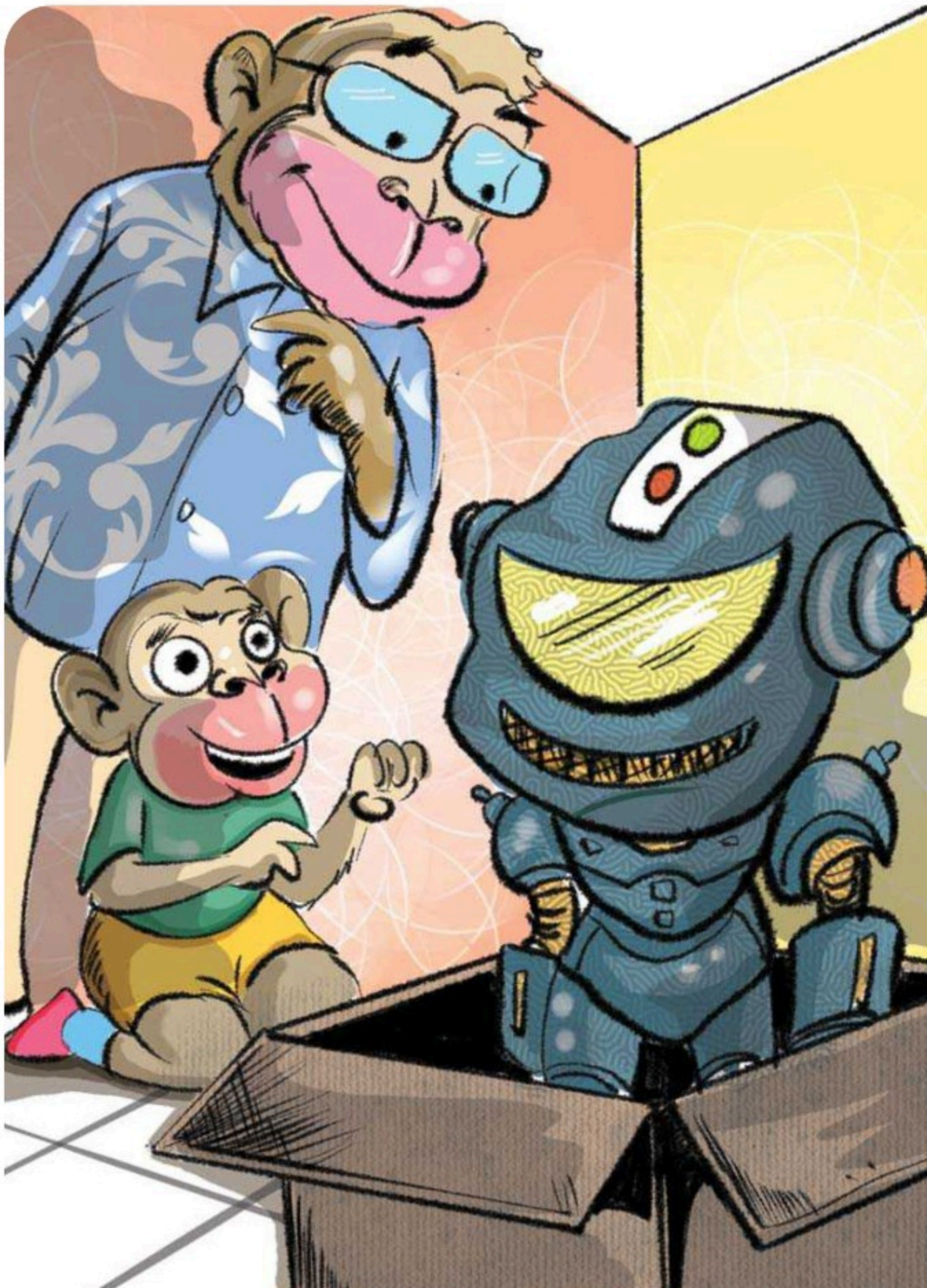

अक्तूबर (द्वितीय) 2021

रोबो, औल राउंडर था, जिसे हर काम आता था. वह मोंटी के साथ खेलता था, होमवर्क में भी उस की मदद भी करता था. इस के अलावा वह सफाई और खाना पकाने में मम्मी की भी मदद करता था. उस ने पापा की गाड़ी भी ठीक कर दी थी.

मोंटी को रोबो के रूप में एक पक्का दोस्त मिल गया. यह ऐसा दोस्त था जिस के साथ उस का झगड़ा भी नहीं होता था.

रोबो के आने के बाद उस ने अपने दोस्तों बोबो खरगोश और टीनू हिरन के साथ खेलने जाना भी कम कर दिया था. जब भी उस का पढ़ाई करने का मन नहीं होता, वह रोबो से अपना होमवर्क करवा लेता. उसे जिस भी चीज की जरूरत होती, वह बैठेबैठे रोबो से वह चीज मंगवा लेता. धीरेधीरे मोंटी अपने हर काम के लिए रोबो पर निर्भर रहने लगा था. वह आलसी हो गया था. उसे खाने और सोने के अलावा कुछ सूझता ही नहीं था. इसी कारण उस का वजन भी काफी बढ़ गया था.

यह देख कर उस के मम्मीपापा को उस की बहुत चिंता होती थी. वे उसे समझाते थे कि उसे अपना काम स्वयं करना चाहिए, लेकिन मोंटी के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती थी. शारीरिक गतिविधि न होने के कारण कुछ ही समय में उस का शरीर बेडौल हो गया और पेट बाहर निकल आया था. उस का पढ़ाई में भी मन नहीं लगता था. स्कूल में टीचर उसे टोकते पर वह उन की बातों को अनसुनी कर देता. उसे लगता था कि केवल एक रोबो ही उस का सच्चा दोस्त है. बाकी सब उस से जलते हैं, क्योंकि किसी के पास उस के जैसा रोबोट नहीं है.

जल्दी ही उस के स्कूल में मिड टर्म ऐग्जाम शुरू हो गए. मम्मीपापा को जिस का डर था वही हुआ. मोंटी को इस बार बहुत कम मार्क्स मिले थे. टीचर और मम्मीपापा से उसे डांट तो पड़ी, साथ ही उसे खुद भी बहुत बुरा लग रहा था, क्योंकि पिछली बार तक उसे क्लास में सब से ज्यादा मार्क्स मिलते थे. यह सब खुद पढ़ाई न कर के अपना होमवर्क रोबो से करवाने का नतीजा था. यह पछतावा दोतीन दिन ही रहा. मोंटी इतना आलसी हो गया था कि वह चाह कर भी अपना कोई काम खुद नहीं कर पाता था.

कुछ दिन बाद मोंटी के स्कूल में स्पोर्ट्स डे था. सब के बारबार कहने पर भी उस ने एक दिन भी प्रैक्टिस नहीं की. स्पोर्ट्स डे के दिन सभी बच्चे अपने मम्मीपापा के साथ स्कूल आए. मोंटी रोबो को भी साथ लाया था. सभी उस के रोबो को आश्चर्य से देख रहे थे. मोंटी यह देख कर मन ही मन खुश हो रहा था. उसे खेलकूद से ज्यादा रुचि सभी को अपना रोबोट दिखाने में थी.

थोड़ी देर में ही रेस शुरू हो गई. मोंटी को छोड़ कर सभी बच्चे फुर्ती से दौड़े, लेकिन मोंटी अपने बढ़े हुए वजन के कारण भाग नहीं पा रहा था. उस ने किसी तरह हांफते हुए आखिरी नंबर पर रेस पूरी की. वह चुपचाप एक तरफ जा कर खड़ा हो गया. उस का दोस्त टीनू हिरन रेस में फर्स्ट आया था.

दौड़ के बाद लौंग जंप प्रतियोगिता होनी थी. सभी बच्चों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया. जब मोंटी की बारी आई तो लंबी छलांग लगाने की कोशिश में वह धड़ाम से मुंह के बल जा गिरा. सभी बच्चे जोरजोर से हंसने लगे. मोंटी को अपनी हालत पर रोना आ गया. उस के दोस्तों ने आगे आ कर उसे उठाया और सभी को हंसने से मना किया. तभी मोंटी के मम्मीपापा और टीचर मोना भालू वहां आ गए.

‘‘देखा, मोंटी तुम कितने फुर्तीले थे. हमेशा स्पोर्ट्स डे पर सब से आगे रहते थे और आज तुम एक छोटी सी रेस पूरी नहीं कर पा रहे हो. हर काम के लिए

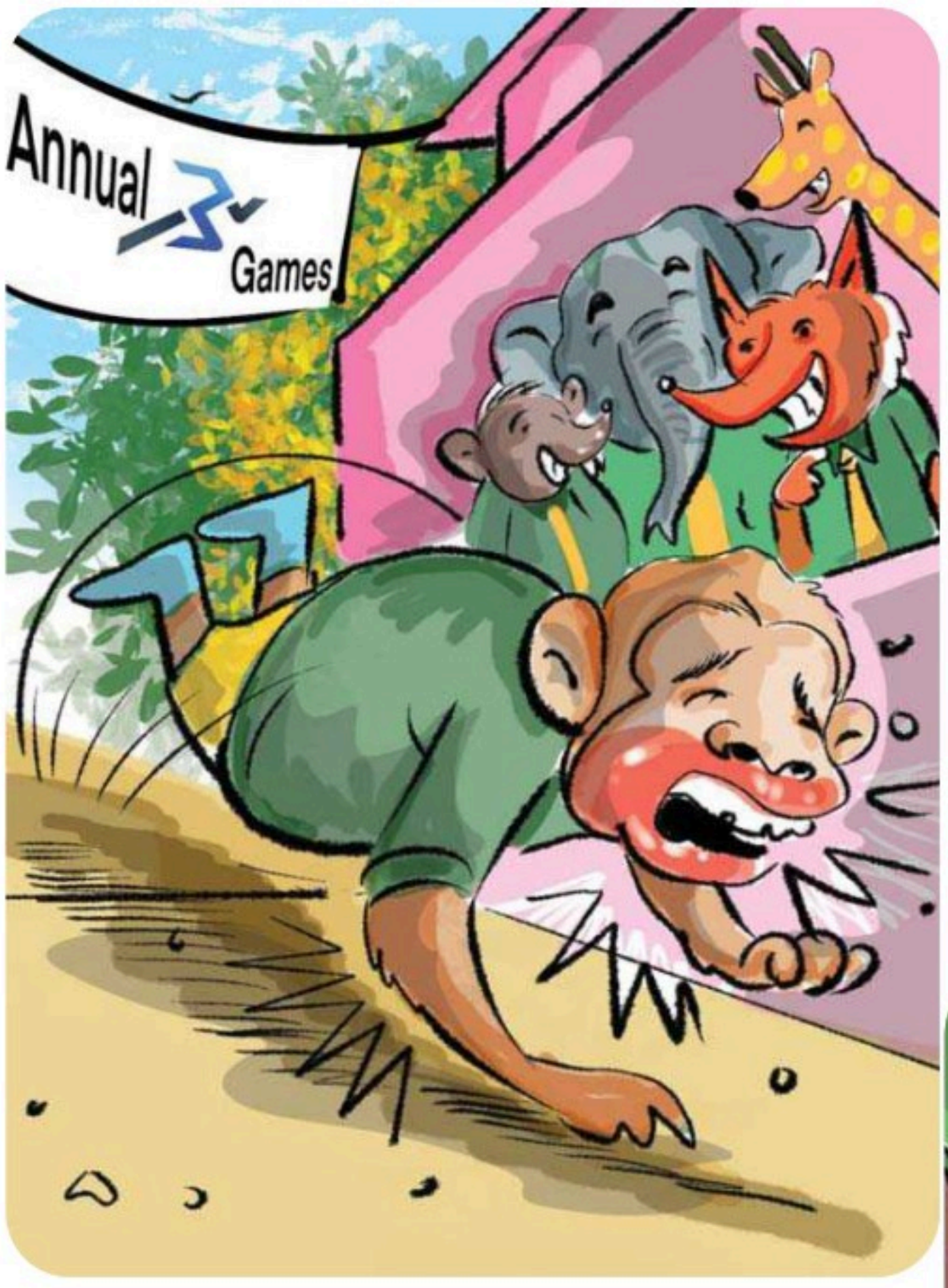

बोबो और टीनू ने आगे बढ़ कर मोंटी को गले लगा लिया.

टीचर ने आगे आ कर कहा, ‘‘मोंटी बेटा, इस बात से सबक ले कर आगे बढ़ो. हमें किसी भी काम के लिए मशीनों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए.’’

उस दिन के बाद मोंटी ने फिर से खूब व्यायाम और खेलकूद शुरू कर दिया, जिस से उस का वजन भी कम हो गया और उस के शरीर में पहले जैसी चुस्तीफुर्ती भी आ गई. इस में टीनू और बोबो ने भी उस का साथ दिया. मोंटी पढ़ाई में भी दोबारा अच्छा प्रदर्शन करने लगा था. वह पहले की तरह अपना सारा काम खुद करने लगा था. अब रोबोट को तभी चार्ज किया जाता था जब किसी को उस की सहायता की जरूरत होती थी. ●

रोबोट पर निर्भर रहने के कारण तुम्हारे शरीर की क्या हालत हो गई है, इसलिए हम तुम्हें टोकते थे,’’ मम्मी ने कहा.

‘‘मोंटी, रोबो के आने के बाद जिन दोस्तों के साथ तुम ने खराब व्यवहार किया वही तुम्हारे लिए आगे आए. तुम्हारा रोबोट नहीं,’’ पापा ने कहा.

मोंटी ने शर्म से सिर झुका लिया, ‘‘आई एम सौरी मम्मीपापा. आज से मैं आप की हर बात मानूंगा.’’

फिर उस ने अपने दोस्तों की मुड़ते हुए उन से कहा, ‘‘सौरी फ्रैंड्स, मुझे पता चल गया है कि मेरे सच्चे दोस्त तुम ही हो.’’

RAJ BHAGAT

स्मार्ट

हैलोवीन रिंग

द्वारा - देविका मेनन

घर पर डरावना माहौल पैदा करने के लिए इन हैलोवीन आकृतियों को चार्ट पेपर का इस्तेमाल करते हुए बनाएं.

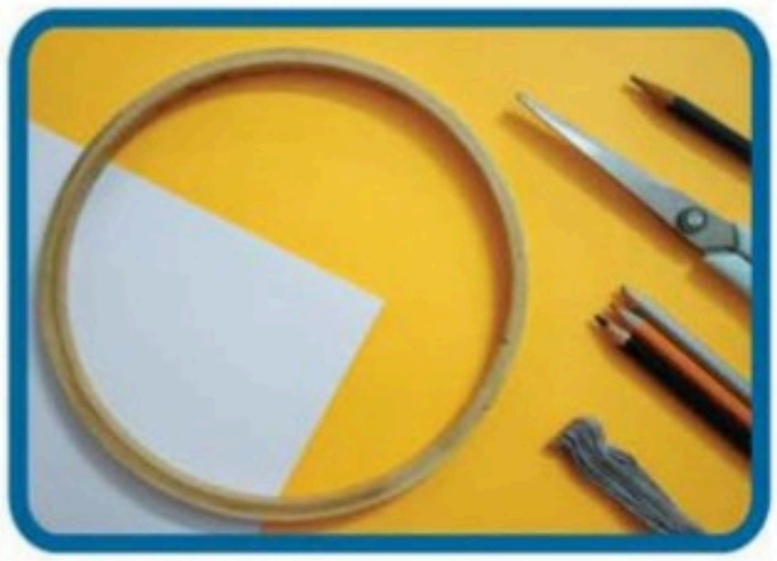

आप को चाहिए : सफेद चार्ट पेपर, एंब्रौयडरी हूप, कैंची, कलरपैंसिल, धागे, पैंसिल.

ऐसे बनाएं :

1. एक सफेद चार्ट पेपर को लीजिए और इस पर हैलोवीन आकृतियों की आउटलाइन खींचें.

2. उन्हें काट लें और रंग दें.

3. हरेक आकृति की चोटी यानी ऊपर की ओर एक छेद कर लें और इस में एक धागा आरपार निकाल दें.

4. इसे एंब्रौयडरी हूप से बांध दें. ऐसा ही सभी आकृतियों के साथ करें. इसे टांगने के लिए सभी धागों को एकसाथ गांठ लगा दें.

डराने के लिए आप का हैलोवीन रिंग अब बन कर तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि **writetochampak@delhipress.in** या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

रोमांचक शाम

कहानी • सुधा गोस्वामी

जैकलीन और बैंजी के लिए ग्रेट ब्रिटेन का एक महत्त्वपूर्ण द्वीप आयरलैंड पसंदीदा जगह थी. जब से वे वहां आए थे, उन्हें वहां रहना अच्छा लगने लगा था. जैकलीन और बैंजी सगे जुड़वां भाई थे. उन के पापा एक मल्टीनैशनल कंपनी में काम करते थे, जहां हमेशा ट्रांसफर होते रहते थे. यहां भी वे अपने परिवार के साथ आ कर पिछले दो साल से रह रहे थे.

हाल ही में उन का चचेरा भाई मौमू भारत से उन के साथ रहने आया था. मौमू गांव में रहता था. उस के पापा खेतीबाड़ी व गौशाला संभालते थे, पर उन की अचानक मृत्यु हो जाने से उस के दादाजी ने मौमू को आयरलैंड भेजने का फैसला किया, क्योंकि गांव में पढ़ने की सुविधा नहीं थी, वह इकलौता बच्चा था और उसे अकेले रहना बिलकुल पसंद नहीं था.

मौमू की मां ने फ्लाइट से उस की सीट रिजर्व करवा दी, ताकि वह आयरलैंड में पढ़ सके. वह अकेला आयरलैंड आ गया. उस के ताऊजी और उन के बच्चे उसे लेने एयरपोर्ट आ गए. वहीं एक स्कूल में उस के ताऊजी ने उस का भी एडमिशन करवा दिया.

मौमू के सैमेस्टर ऐक्जाम खत्म हो चुके थे और ताऊजी ने वादा किया था कि वे छुट्टियों में उन्हें घुमाने उन के ममेरे भाइयों के यहां ले जाएंगे, जो वहीं आयरलैंड में ही रहते थे. वहां जाने में एक दिन का समय लगता था.

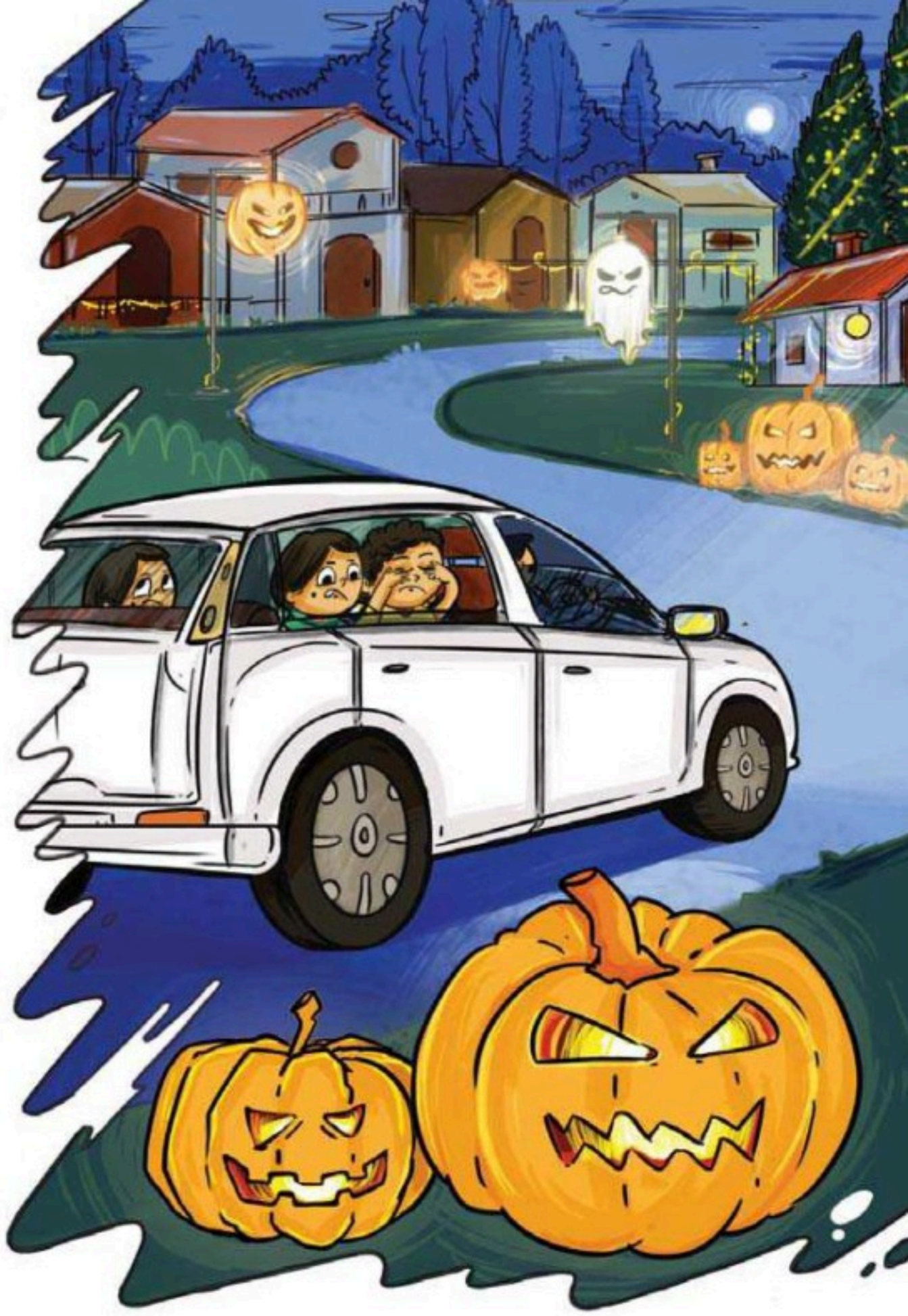

''तुम लोगों को वहां घूमने में बड़ा मजा आएगा और तुम वहां एक विशेष दिन का आनंद भी ले सकोगे, लेकिन तुम्हें एक वादा करना होगा कि तुम भूतों से डरोगे नहीं,'' पापा ने कहा.

घूमने की बात सुन कर मौमू खुशी से उछल पड़ा.

''सच, पापा, डर और भूत का? पापा, आप जानते हो कि मैं डरपोक नहीं हूं. जैकी जरूर अंधेरे से डरता है, लेकिन मुझे बिलकुल भी डर नहीं लगता,'' बैंजी ने कहा.

''और तुम्हें इस विशेष दिन के लिए कुछ ड्रैसेज तैयार करनी होंगी, जो नई न हों,'' मां ने कहा तो वे सब चौंक गए.

''क्यों पापा? हम तो विशेष दिन या त्योहार पर हमेशा नए कपड़े पहनते हैं, फिर पुराने कपड़े क्यों?'' बैंजी ने पूछा.

''बेटा, जैसा तुम्हें पता है तुम्हारी मामी एक आयरिश ईसाई महिला हैं. उन की भी दो बेटियां हैं, नैंसी व चन्नी. दोनों तुम्हारी हमउम्र हैं. हम जिस समय वहां पहुंचेंगे, उस दिन 31 अक्तूबर को पूरे आयरलैंड में मनाया जाने वाला विशेष ईसाई दिवस देखोगे,'' पापा ने बताया.

''ओह, क्या यह क्रिसमस डे और ईस्टर की तरह है,'' बैंजी बोला.

''हां, पर यह अन्य त्योहारों से बिलकुल अलग तरह का होता है. यह पूर्वजों की स्मृति में मनाया जाने वाला एक डरावना व रोमांचक त्योहार है,'' पापा बताने लगे.

''डरावना त्योहार, क्या त्योहार भी डरावने होते हैं,'' जैकलीन की आंखें फैल गईं.

''हां, बेटे, यह लगभग 2 हजार साल पुराना त्योहार है. 16वीं शताब्दी से शुरू हुआ यह त्योहार आयरलैंड से ही अन्य पश्चिमी देशों इगलैंड, स्कौटलैंड, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा में पंहुचा. जो लोग यहां आ कर बसे वे अपने पूर्वजों की याद में प्रतिवर्ष यह त्योहार मनाने लगे. यह युवा व बच्चों द्वारा मनाया जाने वाला विशेष त्योहार है. इस दिन लोग तरहतरह के पकवान भी बना कर रखते हैं जो विशेष कर कद्दू से बने होते हैं.''

''हम भारत में कुम्हड़े यानी पंपकिन को कद्दू कहते हैं,'' बैंजी ने मां को समझाया.

''हां, आयरलैंड में कद्दू की खेती बहुत होती है और यह त्योहार इस की कटाई से संबंधित है. बस इतना ही बताऊंगा. बाकी जब तुम लोग वहां पहुंचोगे तो अपने आप समझ जाओगे. तुम लोग जाने की

तैयारी कर लो. मौमू भी तुम्हारे साथ है,'' उन के पापा ने कहा.

''मौमू, तुम ने गांव में कद्दू की बेल देखी होगी.''

''जी ताऊजी, मैं ने देखी है और कई कद्दू तोड़ कर उन की सब्जी, रायता व खीर भी बनवा कर खाई है,'' मौमू ने बताया.

''पापा, चलो, तैयार हो जाओ.''

तीनों ने अपने कपड़े व जरूरी सामान रख लिया. उन्हें कार से सफर करना था.

''और बच्चो, तुम लोगों को जाते ही सरप्राइज मिलेगा. तैयार रहना, बस डरना मत,'' उन की मां ने कहा.

''पापा, हम ने 'ट्रिक व ट्रीट' के बारे में भी सुना है. ये क्या होता है?'' जैकलीन ने पूछा.

''यह सब अब तुम्हारे मामाजी बता देंगे. जब हम वहां पहुंचेंगे तो तुम्हें पता चल जाएगा,'' पापा ने कार स्टार्ट करते हुए कहा.

रास्ते में उन्हें खूब रोशनी होती दिखी. लाइटें विशेष रूप से चमक रही थीं. ये कुछ अलग तरह की थीं. जगहजगह पंपकिन लैंटर्न लटकी हुई थीं और उन पर डरावने चित्र बने हुए थे. ऐसा लग रहा था मानो वे उन्हें घूर रही हैं. उन की लाललाल डरावनी आंखें देख कर बच्चे डर गए. उन्होंने अपनी आंखें बंद कर लीं और पूरे सफर में ऐसे ही बैठे रहे.

शाम को वे लोग मामाजी के घर पहुंच गए. वहां पहुंच कर देखा कि वहां भी वैसी ही लाइटें लगी हुई थीं. उन्हें घबराहट होने लगी.

''बेटे, बिलकुल मत डरना, हम तुम्हारे साथ हैं. तुम्हारा स्वागत तुम्हारी बहनें व मामी करेंगी, पर घबराना मत,'' मां ने कहा.

मामाजी मुसकराते हुए बाहर आए और उन की कार का दरवाज़ा खोलने के लिए जैसे ही आगे बढ़े, उस से पहले ही लंबेलंबे नाखूनों वाले हाथ आगे आ कर दरवाजा खोलने लगे.

उन्होंने डरतेडरते अपनी आंखें खोलीं. उन्होंने देखा कि भयानक वेशभूषा में बाल बिखेरे दो चुड़ैलें कार का दरवाजा खोल रही हैं.

यह देख कर उन की घिग्घी बंध गई और चीख निकली.

''मां, बचाओ, ये कौन सी राक्षस हैं,'' बैंजी चिल्लाया.

''ही ही ही, बैंजी आखिर पकड़ में आ ही गए न, तुम तो बड़े बहादुर बनते थे. अब क्यों तुम्हारी हवा निकल

गई है?'' एक लंबे दांत वाली लड़की की आवाज आई.

''बेटे, घबरा मत, मैं ने तुम्हें पहले ही बताया था कि डरना मत. यह तुम्हारी ममेरी बहन नैंसी है,'' पापा ने हंसते हुए कहा.

वह सांस ले पाता इस से पहले ही एक डरावना हाथ अंदर आया, उस में पकवानों से भरी प्लेट थी.

''लो, ये पकवान खाओ,'' उस ने सुना. अब तो वह मां से लिपट गया.

''मां, मुझे बचाओ .ये सब क्या है?'' वह चीखा.

''हू हू हू... बस, निकल गई न हवा इतने से ही, मैं हूं तुम्हारी छोटी बहन ऐमी,'' मुखौटे के कारण उस का चेहरा साफ नजर नहीं आ रहा था .

''देखो बैंजी, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते हो,'' उस ने जब अपना मुखौटा हटाया तो वह चौंक गया. उस की हालत देख सभी हंस पड़े.

''ओह, तो ये तुम दोनों हो और डरा कर हमारा स्वागत किया जा रहा है,'' अपने दिल की बढ़ी धड़कन रोकते हुए बैंजी व जैकलीन एकसाथ बोले.

वे कार से जल्दी उतरे व मौमू का हाथ पकड़ कर घर के अंदर भागे.

''चलो, हम भी भेष बनाते हैं,'' नैंसी बोली.

अंदर मामीजी इंतजार कर रही थीं. उन्होंने उन के लिए विशेष पोशाकें व मास्क बनवा रखे थे. वे उन्हें ले गए और जल्दी बदल कर आ गए. अब बैंजी को इतना डर नहीं लग रहा था.

''अब नैंसी और ऐमी तुम लोगों को 'ट्रिक व ट्रीट' के लिए अपने दोस्तों के घर ले जाएंगे,'' मामाजी बोले.

वे पहले नैंसी के दोस्त के घर गए, जो बगल में रहता था. सभी बच्चों ने इस यात्रा का भरपूर आनंद लिया.

अन्य बच्चे भी मुखौटे पहने उन की टोली में शामिल हो गए. उन्होंने उन्हें कद्दू से बने विभिन्न प्रकार के व्यंजन खिलाए. वे जहां भी गए, सब जगह उन का ऐसे ही स्वागत किया गया.

वे काफी रोमांचित थे. दूसरों को भय और डरा देख कर खूब हंसी आती, वे खिलखिलाते व डरावनी आवाजें निकालते. नैंसी, ऐमी, बैंजी, जैकी और मौमू 31 अक्टूबर से शुरू हो कर 2 नवंबर तक हैलोवीन डे मनाया.

'जो डर गया सो मर गया' बच्चे सामूहिक रूप से नारे लगाते हुए अपनेअपने घर लौट गए. डर का नामोनिशान उन के दिलोदिमाग से दूर हो चुका था. ●

दादाजी और दशहरा

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

रिया और राहुल खेल रहे थे.

दशहरा बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है.

दशहरा असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है.

तुम दोनों कौन सा खेल खेल रहे हो?

दादाजी, इस बार हम दशहरा में रामलीला नहीं देख सकेंगे और न ही रावण को जलते हुए देख पाएंगे.

यह तो बहुत मजे की बात है. लेकिन क्या तुम्हें पता है कि दशहरा क्यों मनाया जाता है?

इसी वजह से हम एक खेल खेल कर अपना समय बिता रहे हैं.

क्योंकि इस दिन राक्षसों के राजा रावण को मारा गया था.

हां, लेकिन रावण की पराजय हमें और भी बहुत कुछ बताती है.

वह क्या है, दादाजी?

रावण बहुत बड़ा ज्ञानी था, लेकिन उस ने अपने ज्ञान का इस्तेमाल ठीक से नहीं किया.

इसलिए इस से हमें सीख मिलती है कि अपने ज्ञान का इस्तेमाल अच्छे कार्यों के लिए करना चाहिए.

हां, रावण बहुत शक्तिशाली था फिर भी वह पराजित हुआ था.

इस से यह भी शिक्षा मिलती है कि हमें अपनी ताकत पर घमंड नहीं करना चाहिए और अपनी शक्ति का उपयोग अच्छे कामों को करने में करना चाहिए.

बिलकुल सही, इतना ही नहीं, रावण अपनी बहन शूर्पणखा पर बहुत ज्यादा विश्वास करता था जिस ने उसे युद्ध करने के लिए मजबूर कर दिया था.

इस से हमें यह सीख मिलता है कि बिना सोचविचार के किसी बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए, वरना यह बरबादी की तरफ ले जाएगा.

जैसा रावण के साथ हुआ था.

बिलकुल सही, दादाजी. हम तो दशहरा को सिर्फ बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाते हैं, लेकिन दशहरा तो हमें बहुत सी बातों को सिखाता है.

दादाजी, अब हम दोनों रावण की तरह ही ड्रैस पहनेंगे और आप हमारे पहनावे को परखेंगे.

जरूर, बच्चो.

SONAL

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

हमारी और उन की याददाश्त

मछली हम से काफी भिन्न दिखाई देती है. वह बोलती नहीं है या उस के चेहरे का कोई भाव नहीं होता है और वह हम जैसे हवा में सांस भी नहीं लेती है, लेकिन शोधकर्ताओं ने खोज कर के पता लगाया है कि मछली कुछ मामले में हमारे समान ही है जितना कि हमें पता भी नहीं है.

मनुष्यों की तरह ही उम्र बढ़ने के साथसाथ मछली भी अपनी याददाश्त खो देती है. शोधकर्ता मछलियों पर कई वर्षों तक अध्ययन करते रहे हैं. उन्होंने पाया कि युवा मछली आसानी से तैरती है और दिशा का पता लगा लेती है, जबकि बुजुर्ग मछली को दिशा का पता करने में संघर्ष करना पड़ता है और कभीकभी वह भूल भी जाती है कि उसे कहां जाना था और कहां जा रही है.

इतना ही नहीं, मछलियां सामाजिक प्राणी भी हैं. हालांकि वे अपने व्यवहार को एक ही समय में घटित होते देख और समूहों में अपने पड़ोसियों के बरताव को प्रतिबिंबित कर सकती हैं. वे अपने समूह से बाहर की मछली को पहचान भी सकती हैं. ज्यादातर मछलियों में यह याददाश्त 24 घंटे तक बनी रहती है. वे ज्यादा से ज्यादा नई मछलियों के पास आना जारी रखती हैं और उन्हें अपना दोस्त बनाती हैं.

मछलियों की लगभग 30 हजार प्रजातियां हैं.

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

25 अक्तूबर को विश्व पास्ता दिवस है.

पिंजरे से आजादी

कहानी • पूनम पांडे

मायरा जब भी अपने कमरे की खिड़की से बाहर झांकती तो उदास हो जाती. वह भाग कर मां के पास जाती और कहती, ''मां, मैं ने अभी देखा कि कनु भैया का बगीचा कितना सुंदर है, वहां कितने सारे पशुपक्षी हैं.''

मां ने सुना और जवाब दिया, ''हां, हां.''

मगर मां अच्छी तरह जानती थीं कि कनु के बगीचे को किन चीजों की वजह से मायरा सुंदर कह रही थी. वहां एक छोटा सा पिंजरा था, उस में तोता है. उस से बड़ा एक और पिंजरा है उस में बंदर हैं. एक बड़ा सा पिंजरा है जिस में सफेद रंग के बहुत प्यारे खरगोश हैं और हां, एक और पिंजरा है जिस में एक पिल्ला रहता है.''

मायरा की मां पिछले दो महीने से रोज यही कहानी सुन रही थीं. जब से कनु और उस का परिवार अपनी हाउसिंग सोसायटी में रहने लगे. तब से ही मायरा की पहली नजर इस बगीचे पर जा कर टिक गई थी.

वे लोग तीसरी मंजिल पर किराए के मकान में रह रहे थे, जहां से कनु के पूरे बगीचे का सुंदर नजारा दिखाई देता था. मायरा जिद करती थी कि उस की मां तोते के लिए पिंजरा खरीद लें, लेकिन मां उस को यही समझाने की कोशिश करती थीं कि किसी भी पशु या पक्षी को कैद में रखना अपराध है. यह गलत बात है.

पहले तो मायरा मान गई.

लेकिन कुछ समय बाद वह खरगोश मांगने लगी. मां ने आज भी उस को मनाया और बालकनी में बारबार आ रही तितली से दोस्ती करने को कहा. मायरा को बहुत अच्छा लगा. उस ने 4 गमलों मे फूल उगा रखे थे, गुलाब, कनेर, गुलदाउदी, सूरजमुखी आदि. खिले हुए फूलों पर तितली मंडरा रही थी.

मायरा ने पैंसिल, चित्र बनाने वाली कौपी और रंग निकाले तथा चित्र बनाने लगी. लगभग दो घंटे तक तितली वहीं रही. मायरा ने सुंदर चित्र बना लिए मां ने खुश हो कर उस को दो गिलास मैंगोशेक पिलाए. मायरा को मजा आ गया. ताजा बना हुआ मैंगोशेक उस को बेहद पसंद था.

तभी उस की मां का फोन बजा.
पड़ोस से फोन आया था कि सामने बगीचे वाला कनु अचानक बीमार हो गया है और उस को अस्पताल ले जा रहे हैं. मायरा और उस की मां भी तुरंत पता लगा कर अस्पताल पहुंच गए.

कनु को बुखार था. उसे उल्टी और दस्त भी हो रहे थे. इसीलिए उस को वार्ड में रखा गया था. कनु सब से बात कर रहा था और बारबार कह रहा था, ‘‘मुझे घर जाना है, यहां इस पिंजरे में नहीं रहना है.’’

जब कनु ने मायरा और उस की मां को देखा तो उन से भी विनती की, ‘‘मुझे घर ले चलो, यहां इस पिंजरे में मेरा दम घुट रहा है.’’

डाक्टर आया तो उन्होंने कनु से कहा, ‘‘जरा हौसला रखो, तुम तो 15 साल के समझदार लड़के हो, सुनो कनु, तुम को 3 दिन यहीं रहना होगा. यहां अच्छी तरह देखभाल होगी. ठीक होना जरूरी है. फिर ठीक हो कर आराम से घर पर रहना.’’

कनु यह सुन कर रोने लगा. मायरा को बहुत अजीब लगा. वह बस 10 साल की ही थी, पर वह इस तरह नहीं रोई. मायरा और मां कुछ देर बाद वापस घर लौट आए.

घर वापस आने के बाद भी कनु की आवाज सुनाई दे रही थी. वह बिलकुल खामोश हो कर उस के बगीचे को देखती थी. आजकल कनु के भाईबहन बगीचे में जानवरों और पक्षियों के लिए दानापानी रख रहे थे. मायरा को बारबार कनु की याद आती थी. ‘वह कब आएगा,’ हर पल यही सोचा करती थी.

कनु दो दिन बाद बिलकुल ठीक हो कर घर वापस आ गया. हाउसिंग सोसायटी में उस की चहकती हुई आवाज फिर से सुनाई दे रही थी. मायरा भी सुन रही थी.

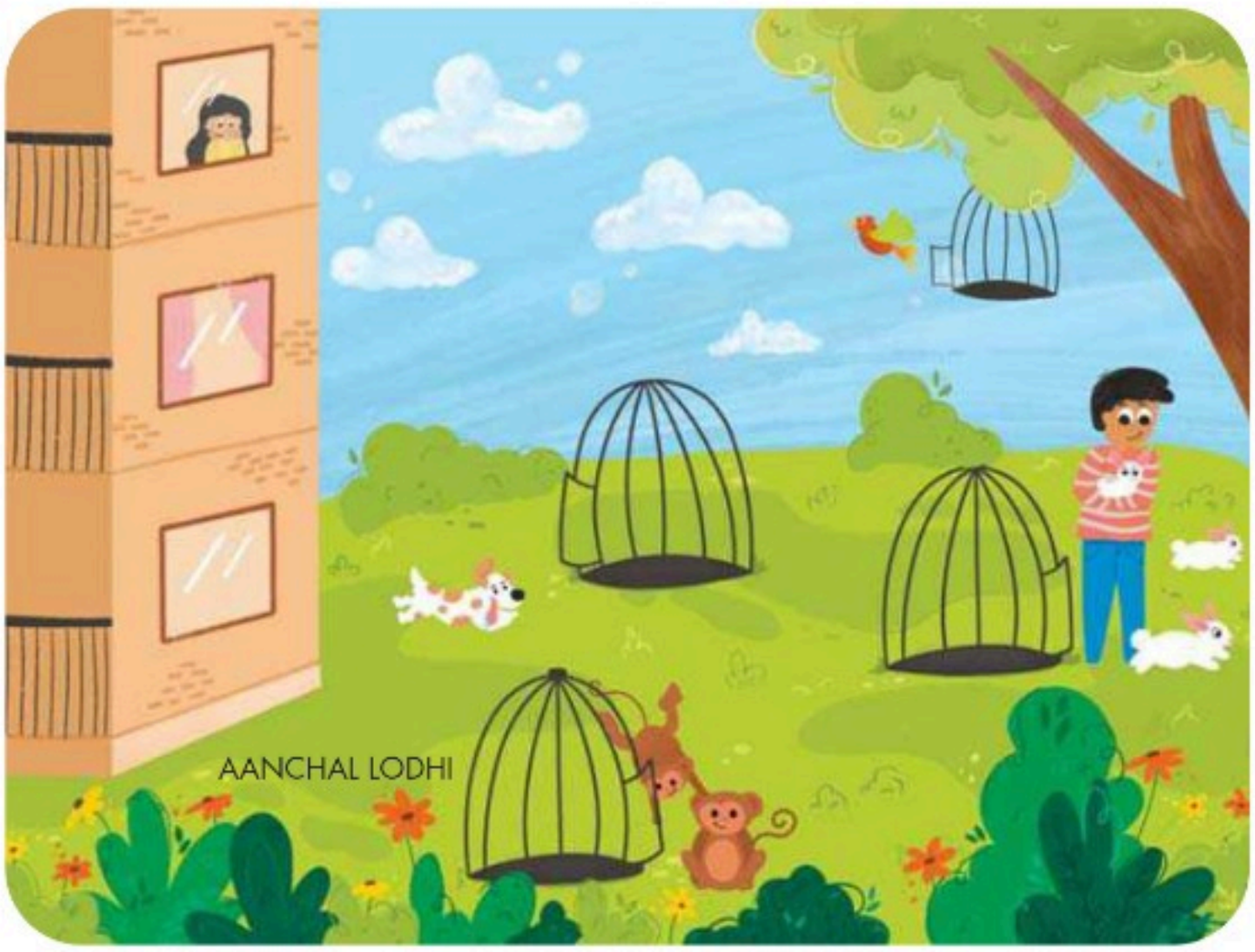

मायरा ने अपने कमरे की खिड़की पर आ कर देखा, बगीचे में कनु खड़ा था. वह पक्षियों को पिंजरे से आजाद कर रहा था. खरगोशों को वह जंगल में छोड़ने चला गया. सारे पिंजरे जल्दी खाली हो गए.

मायरा ने मां को आवाज दे कर कहा, ''मां, देखो, सब पिंजरे खाली हो गए हैं.''

मां आ कर बोलीं, ''हां बेटा, ऐसा लगता है कि कनु को अब यह समझ आ गया है कि हर जीवजंतु को आजादी पसंद है. किसी की आजादी कभी छीननी नहीं चाहिए.''

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : रास्ता बताओ :

पृष्ठ 12 : सही बॉल को चुनें :

पृष्ठ 21 : मोमो चूहे की मदद करें :

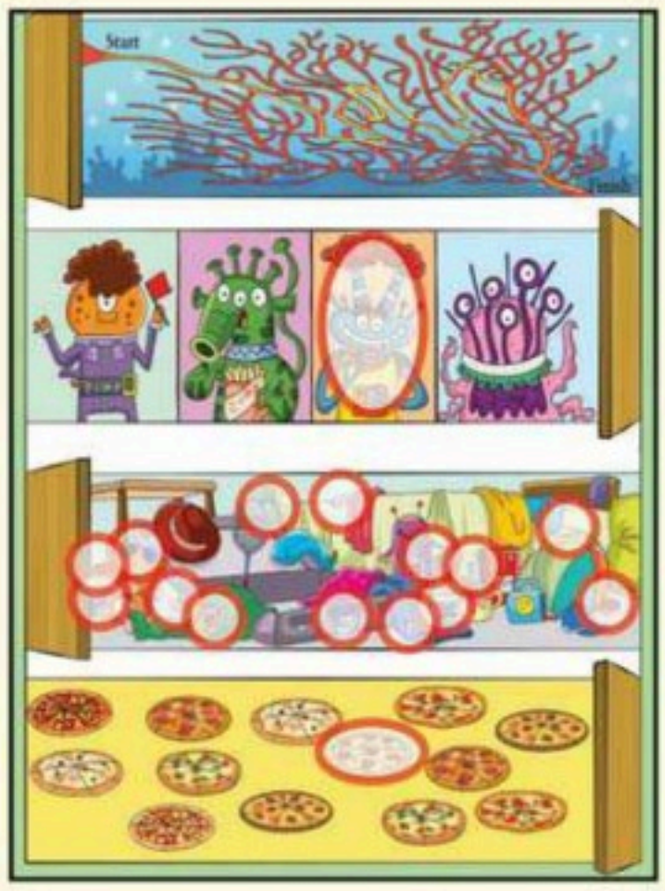

पृष्ठ 25 : मधुमक्खियों के घर खोजो :

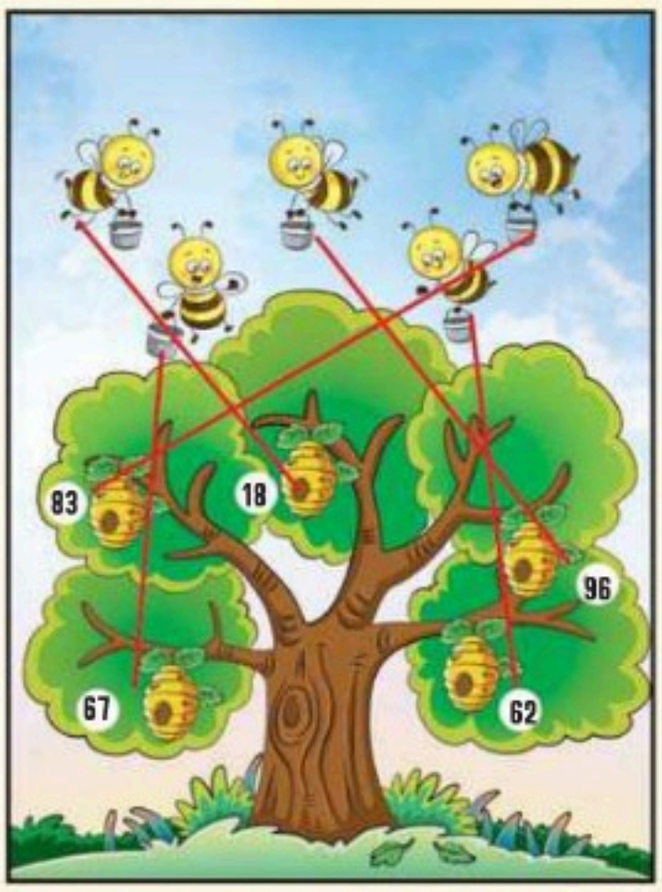

पृष्ठ 29 : छिपे चित्र ढूंढें :